वार्षिक प्रतिवेदन
Annual Report
2012-13

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक प्रतिवेदन

1 अप्रैल 2012 से 31 मार्च 2013

विषय–सूची

परिचय			1
संगठन			2
न्यास का निर्माण			3
सारांश			5
कलानिधि			7
कार्यक्रम क	:	संदर्भ पुस्तकालय	7
	:	डिज़िटल अभिलेखागार	8
	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार	9
	:	संरक्षण एकक	9
कार्यक्रम ख	:	मीडिया एकक	10
सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान लैबः			13
कलाकोश			16
कार्यक्रम क	:	कलातत्त्वकोश	16
कार्यक्रम ख	:	कलामूलशास्त्र	16
कार्यक्रम ग	:	कलासमालोचना	17
	:	क्षेत्र अध्ययन	21
दृश्य कला प्रभाग–क्षेत्र अध्ययन :			
जनपद–सम्पदा			22
कार्यक्रम क	:	मानवजाति विज्ञान संग्रह	22
कार्यक्रम ख	:	आदि दृश्य	23
कार्यक्रम ग	:	जीवन–शैली अध्ययन	25
	:	पूर्वोत्तर अध्ययन कार्यक्रम	27

कलादर्शन 33

प्रदर्शनियाँ /कार्यकलाप 33

सार्वजनिक व्याख्यान/सेमिनार /कार्यशाला 34

संगीत समारोह 34

क्षेत्रीय केन्द्र 36

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी 36

दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलूरु 37

पूर्वोत्तर केन्द्र, गुवाहाटी 38

सूत्रधार 39

अनुबन्ध

1. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य –(31.3.2013 की स्थिति के अनुसार) 40
2. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्य – 31.3.2013 की स्थिति के अनुसार) 41
3. 1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च, 2013 तक इ०गा०रा०क०केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनियाँ 42
4. 1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च, 2013 तक इ०गा०रा०क०केन्द्र में आयोजित व्याख्यान एवं अन्य कार्यक्रमों की सूची 43
5. 1 अप्रैल, 2012 से मार्च, 2013 तक इ०गा०रा०क०केन्द्र के प्रकाशनों की सूची 46
6. इ०गा०रा०क०केन्द्र में वरिष्ठ/कनिष्ठ शोध अध्येताओं/ परामर्शदाताओं की सूची 2012–2013 47

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक रिपोर्ट 2012–13

परिचय

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.के.) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में 1987 में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, सामाजिक–संरचना और ब्रह्माण्ड–व्यवस्था के साथ सम्बद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं– लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएँ, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाओं तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता है।

इस केंद्र का उद्देश्य कलाओं से संबंधित क्षेत्रों में भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच तथा भारत में समुदायों के बीच भी और समान वैश्विक परिप्रेक्ष्य रखने वाले पूरे विश्व में शोध, अध्ययन और संवाद बढ़ाने का भी है ।

इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कलाओं के विषय में अधिगम की विलक्षणता तथा शक्ति इस तथ्य में परलक्षित है कि यह लोक और शास्त्रीय, मौखिक और श्रुत, लिखित और उच्चरित और प्राचीन और आधुनिक को एक परिपूर्णता में देखता है । यहॉ विभिन्न क्षेत्रों के बीच संवाद और निरंतरता पर बल दिया जाता है जो अन्तंतः मनुष्य को मनुष्य के साथ और मनुष्य को प्रकृति के सहजीवन से जोड़ता है ।

इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने प्रकाशनों, मल्टीमीडिया निर्मितियों, अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय विचार गोष्ठियों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों और व्याख्यान मालाओं द्वारा अपने शैक्षणिक और अनुसंधान कार्य की अभिव्यक्ति करता है । स्कूल और अन्य शिक्षा संस्थान इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रसार कार्यक्रमों की परिधि में आते हैं । बहु विषयक भौगोलिक अध्ययनों द्वारा यह अनुसंधान को पूर्ण बनाता है ताकि विकास प्रक्रिया में सांस्कृतिक निवेशों को उत्प्रेरक बनाया जा सकें।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं–

(1) लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

(2) कला, मानविकी, और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसंधान एवं प्रकाशन का कार्य।

(3) सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन एवं सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु कोर संग्रह के साथ–साथ जनजातीय एवं लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार–विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला–कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

(6) भारतीय गाथाओं के अनुरूप एवं महत्व पूर्ण अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना।

(7) विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने–बाने के रचनात्मक एवं गतिशील तत्त्वों को स्पष्ट करना।

(8) भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना।

(9) कला और संस्कृति के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार–तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध ज्ञान के आधार को विस्तृत करने के प्रयोजन से भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

संगठन

इ०गा०रा०क० केन्द्र के घोषणा विलेख में उल्लिखित अनिवार्यताओं को पूरा करने और उसके मुख्य लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु केन्द्र, ऐसे पाँच प्रभागों के जरिए कार्य संपन्न करता है जो संरचनात्मनक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए आंतरिक रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं ।

कलानिधि प्रभाग में बहुविध संग्रहों से युक्त एक सन्दर्भ पुस्तकालय है, जिसमें मुद्रित पुस्तकें, स्लाइड़े, माइक्रोफिल्म, फोटो और दृश्य–श्रव्य सामग्री संरक्षण प्रयोगशाला, मल्टीमीडिया एकक और सांस्कृतिक अभिलेखागार शामिल है ।

कलाकोश विभाग आधार–भूत शोध कार्य करता है। और बौद्धिक परंपराओं की उनको बहुस्तरीय और बहु विषयक आयामों एवं सांस्कृतिक संबंधों की दृष्टि से छान–बीन करता है। अपने शोध और प्रकाशन कार्यक्रमों के जरिए यह प्रभाग मौखिक के साथ ग्रंथ, श्रुत के साथ दृश्य, जीवन ओर कला तथा प्रथा के साथ सिद्धांत को जोड़ते हुए सांस्कृतिक प्रणाली के अभिन्न ढाँचे में कलाओं को प्रतिष्ठित करने का प्रयास करता है । इसने (क) कलातत्वकोश, जो कि कला और शिल्प में बुनियादी तकनीकी शब्दावलियों पर आधारभूत संकल्पना और अंतर्विधा शब्दालियों /थिसारसों का शब्दाकोश है (ख) कलामूलशास्त्र जो कि भारतीय कलाओं का आधार–भूत ग्रंथ माला है (ग) कला समालोचना, जो कि भारतीय कलाओं पर समीक्षापरक लेखों की पुनः मुद्रणमाला है,(घ) भारतीय कलाओं का बहुखंडीय विश्वकोश, और (ड) क्षेत्र–अध्ययन के लिए दीर्घ कालिक कार्यक्रम शुरू किया है ।

जनपद सम्पदा विभाग कलाकोश के कार्यक्रमों का पूरक है । यह ग्रामीण परिवेश की समृद्ध बहुरंगीय विरासत और छोटे पैमाने पर समाज के पाठ्य से प्रसंग में स्थानांतरित करने पर ध्यान केन्द्रित करता है। इसकी गतिविधियाँ, जो एक समुदाय के आसपास घुमती है, को समाहित करते हुए जीवन शैली लोक परम्परा अध्ययन कार्यक्रमों, और क्षेत्र सम्पदा पर ध्यान केन्द्रित करती है । इसने विकसित की हैः (क) जनजातियों के बारे में सग्रंह सहित लोक कला और शिल्प के सामग्री प्रलेखन का मौलिक संग्रह (ख) मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ तथा (ग) भारतीय सांस्कृतिक घटना और उनकी समग्रता और पारस्परिकता के लिए वैकल्पिक मॉडल विकसित करने तथा पर्यावरण, पारिस्थितिकी, कृषि, सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मानदंडों के परस्पर जोड़ने हेतु जनजातीय समुदायों के बहु– अनुशासनात्मक जीवनशैली अध्ययनों को शुरू किया है ।

कलादर्शन प्रभाग एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषयक संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों एवं प्रस्तुतियों के लिए एक मंच उपलब्ध करवाता है। इसी की गतिविधियों में बच्चों के लिए कार्यक्रम बाल–जगत आता है। कलादर्शन, इ०गा०रा०क० केन्द्र के शोध कार्यों का प्रचार–प्रसार करके भारत एवं विश्व के मध्य झरोखे खोलता है ।

कलानिधि और कलाकोश मुख्य और गौण सामग्री का संग्रह करने, मौलिक संकल्पनाओं की खोज करने, रीति सिद्धांतों की पहचान करने, सिद्धांत और ग्रंथ (शास्त्र) के स्तर पर तकनीकी शब्दावलियों की व्याख्या करने और 'मार्ग' के स्तर पर बौद्धिक विमर्श तथा स्पष्टीकरण करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं । जनपद संपदा ओर कला दर्शन लोक, देश ओर जन के स्तर पर–अभिव्यक्ति, प्रक्रियों, जीवन कार्यों, जीवन शैलियों और मौखिक परंपराओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एक साथ मिलकर इन चारों प्रभागों के कार्यक्रम कलाओं को जीवन पद्धतियों, निर्वाह ओर संसाधन प्रबंधन नीति तथा प्राकृतिक और समाज विज्ञान–विषयों के साथ उसके संबंध की उनके मौलिक संदर्भ में रखते है । शोध की प्रणाली, कार्यक्रम और अंतिम परिणाम में सादृश्यता होती है और इस प्रकार प्रत्येक प्रभाग का कार्य, दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होता है ।

इन चार प्रभागों के अलावा, **सांस्कृतिक सूचना प्रयोगशाला** (सीआइएल), जो 1994 में यूएनडीपी के सहयोग से स्थापित की गई थी, विश्व स्तरीय प्रलेखन के रूप में उभरी है जो यह प्रदर्शित करती है कि सांस्कृतिक विरासत को जीवन और पर्यावरण के प्रंबधन जिसमें मानव और मानवेतर, जैविक और गैर जैविक समुदाय है, हेतु सतत् नीति के आलंब के रूप में संस्कृति की समन्वित अवधारणा में किस प्रकार प्रतीयमान रूप में पुनः सृजित किया जा सकता है । यह दुर्लभ पाण्डुलिपियों, पुस्तकों, फोटोग्राफ, स्लाइडों और दृश्य–श्रव्य संग्रहों के डिजिटाइजेशन औरा दीर्घकालिक परिरक्षण के लिए मुख्य केंद्र के रूप में भी न केवल इ.गा.रा.क केंद्र के लिए कार्य करता है बल्कि संस्कृति मंत्रालय के अधीन अन्य संगठनों के लिए भी कार्य करता है ।

सूत्रधार प्रभाग अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनिक सहयोग तथा सेवाएँ प्रदान करता है ।

जैसा कि इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के लोगो में स्पष्ट है, सभी प्रभागों के कार्यक्रम परस्पर संबंधित होते है और सभी अनुभाग सभी कार्यक्रमों में भाग लेते है ।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ.16–7/86–कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, न्यास का गठन एवं पंजीकरण 24 मार्च, 1987 को किया गया । इस न्यास की स्थापना के समय सात सदस्य थे और इसे समय–समय पर पुनर्गठित किया गया है ।

31 मार्च, 2013 की स्थिति के अनुसार न्यासियों और कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के नाम अनुबन्ध I और II पर दिए गए है ।

वर्ष 2012–13 के कार्यक्रमों के मुख्य आकर्षण

वर्ष 2012–13 इ०गा०रा०क० केन्द्र के लिए एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना वाला वर्ष रहा। केंद्र की स्थापना आज से पच्चीस वर्ष पहले, 19 नवम्बर, 1987 को हुई थी। इसे ध्यान में रखते हुए वर्ष के दौरान अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

19 नवम्बर, 2012 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित भव्य समारोह में भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने समारोह का उद्घाटन किया । इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा– "आज जब भारत पर्याप्त आर्थिक प्रगति और वैज्ञानिक विकास के चौखट पर खड़ा है, प्रगति और व्यक्ति की आंतरिक आवश्यकता के बीच; उसकी आध्यात्मिक खोज और भौतिक आकांक्षाओं के बीच; तकनीकी उन्नति और परिस्थिति की समानता बनाए रखने की आवश्यकता के बीच संस्कृति की

माननीय भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी 11 डीवीडी के संग्रहों का विमोचन करते हुए बाई से दायी तरफ डॉ. कपिला वात्स्यायन श्री चिन्मय आर. घारे खान, चन्द्रेश कुमारी कटोच एवं श्रीमती दिपाली खन्ना

भूमिका संतुलनकारी घटक के रूप में सुस्पष्ट है, इस पर अब जोर देने की आवश्यकता नहीं रह गई है । इस संदर्भ में इ०गा०रा०क० केन्द्र जैसी संस्थाओं की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है । विगत वर्षों में इ०गा०रा०क० केन्द्र के महान योगदान को ध्यान में रखकर मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रपति सचिवालय, इस समय राष्ट्रपति भवन के पुरातात्विक इतिहास, उसके निर्माण और उसके कला एवं सांस्कृतिक शिल्पकृतियों के विभिन्न पहलुओं पर बहु–खण्डीय परियोजना शुरु करने के लिए इ०गा०रा०क० केन्द्र के साथ सहयोग कर रहा है । मेरी शुभकामनाएँ हैं कि परियोजना पूरी तरह से सफल हो" ।

संस्कृति मंत्री, श्रीमती चंद्रेश कुमारी कटोच ने कहा "इ०गा०रा०क० केन्द्र ने इतने कम समय में कला एवं संस्कृति पर अनेक प्रकाशनों, सम्मेलनों, प्रदर्शनियों, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों, मानवजातीय फिल्मों, डीवीडी और डिजिटल डेटाबेस के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अकादेमिक जगह बना ली है । दक्षिण पूर्व एशिया, चीन एवं यूरेशिया पर केंद्र के कार्यक्रम से कई मायनों में अग्रणी हैं। मैं एक बार पुनः इ०गा०रा०क० केन्द्र को 25वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर बधाई देती हूँ एवं आशा करती हूँ कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी के विजन को आगे बढ़ाने के लिए कार्यक्रम तैयार करने, ठोस परियोजनाएँ विकसित एवं तैयार करने में संस्थान के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होता रहेगा" ।

गत 25 वर्षों का इ०गा०रा०क० केन्द्र के कार्यों का ब्योरा देते हुए इ०गा०रा०क० केन्द्र, न्यास के अध्यक्ष श्री आर० घारे खान ने कहा कि "किसी राष्ट्र की तरह कोई संस्थान अपनी सफलता पर न ही विश्राम कर सकता है और न ही उसे करना चाहिए । अभी बहुत कुछ करना बाकी है। गत दो दशकों में मायने बहुत बदल गए हैं, अपेक्षाएँ बहुत बढ़ गई हैं, जिस रफ्तार से संचार एवं सूचनाएँ सारी दुनिया में जा रही हैं वह रफ्तार कई गुना बढ़ गई है । इ०गा०रा०क० केन्द्र को भी उसी गति से चलना होगा और संपर्कों को बढ़ाना होगा, अधिक दृश्यमान होना होगा, पब्लिक इण्टरफेस को व्यापक बनाना होगा, नए अध्ययन करने होंगे, नए कार्यक्रम आरम्भ करने होंगे तथा भारत एवं विदेश, विश्वविद्यालयों और संस्थाओं के साथ अपने नेटवर्क बढ़ाने होंगे "।

इ०गा०रा०क०केन्द्र की संस्थापक, न्यासी एवं प्रथम निदेशक डा० (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन ने कहा कि "तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी ने उद्घाटन के समय पाँच पौधे लगाए थे तथा पाँच दीप कमल के तालाब में तराए थे। वे वृक्ष अब बढ़कर आसमान चूम रहे हैं एवं उनकी जड़ें नवजीवन प्रदान करने के लिए फैल गई हैं"। उन्होंने कहा कि जैसी परिकल्पना की गई थी, आईजीएनसीए विज्ञान एवं कलाओं का केन्द्र है । यह देश जिन शास्वत मूल्यों के लिए जाना जाता है, वह सब यहाँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। उन्होंने यह कहते हुए श्रीमती इंदिरा गाँधी के शब्दों को उद्धृत किया कि "ए होम एट होम एण्ड ए होम इन द वर्ल्ड"।

इ०गा०रा०क० केन्द्र की सदस्य सचिव श्रीमती दीपाली खन्ना ने अपने धन्यवाद प्रस्ताव में यह आश्वासन दिया कि आईजीएनसीए अपने आप को सुदृढ़ बनाता रहेगा तथा संस्थानों के व्यापक नेटवर्क तथा बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचने का प्रयत्न करता रहेगा ।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति ने 19 नवम्बर, 2012 को आईजीएनसीए के रजत जयन्ती समारोह के उद्घाटन के अवसर पर वृत्तचित्रों के 11–डीवीडी सेटों का विमोचन किया ।

उद्घाटन समारोह के पश्चात, आईजीएनसीए ने अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जिनमें प्रदर्शिनियाँ, संगीत कार्यक्रम एवं अकादमिक गतिविधियाँ शामिल थीं।

आईजीएनसीए के रजत जयन्ती समारोह के भाग के रूप में 20 से 21 नवम्बर, 2012 को गुंडेचा ब्रदर्स ने ध्रुवपद पर एक संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। पहले दिन के प्रस्तुतकर्त्ता श्री उमाकान्त गुंडेचा एवं श्री रमाकान्त गुंडेचा थे । दूसरे दिन आईजीएनसीए के ओडिटोरियम, सी वी मैस रोड, में प्रो० टी०एन०कृष्णन एवं डां० एन राजम ने वायलिन जुगलबंदी प्रस्तुत की ।

आईजीएनसीए ने प्रागैतिहासिक शैलकला पर एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की ।

अन्तर्राष्ट्रीय शैलकला प्रदर्शनी के अवसर पर, शैलकला का पुनः सृजन

सम्मेलन में विश्व के विभिन्न भागों से अनेक विद्वानों ने भाग लिया जिसमें डॉ० एंड्रयू रोजवादोवस्की (पोलैंड), प्रो० झांग याश (चीन), डॉ० झू लाइफेंग (चीन), डॉ० पिंडी सेतियावान (इण्डोनेशिया), डॉ० राबर्ट जी० बेडनारिक (आस्ट्रेलिया), प्रो० जेन बालमे (आस्ट्रेलिया), डॉ० गौरी तुमि इचेवारिया लोप (पेरु), डॉ० राक्सो फर्नांडीज ओटेगा (क्यूबा), डॉ० लारेंस लोयनडोर्फ (यूएसए), डॉ० इरविन न्यूमेयर आस्ट्रिया, प्रो० होपीलिटो कोलादो गिरालदो (स्पेन), डॉ० पैट्रिक पेलिट (फ्रांस), प्रो० एमेनुयल अनाती (इटली), डॉ० जुल्फिकार अली कल्होरो (पाकिस्तान) थे ।

आईजीएनसीए की स्थापना के समय से संबद्ध वयोवृद्ध राक आर्ट विद्वान डॉ० यशोधरा मथपाल को अपने जीवनकाल तक इस क्षेत्र में कार्य के लिए सम्मानित किया गया । अन्य भारतीय विद्वानों ने जिन्होंने सम्मेलन में भाग लिया उनमें प्रो० वी०एच० सोनवने, प्रो० जगन्नाथ दास, डॉ० देबेंद्रा बेहुरा, डॉ० नारायण व्यास, डॉ० एस०बी०ओटा, डॉ० (सुश्री) नंदिनी बी० साहू, डॉ० सोमनाथ चक्रवर्ती, डॉ० मुरारीलाल शर्मा, सेवानिवृत्त कर्नल डॉ० ए०के०प्रसाद, डॉ० ताशी लडावा, डॉ० द्विपन बाजबरुआ, डॉ० बी०आर० मणि, डॉ० आर०सी० अग्रवाल, प्रो० एस०सी० मल्लिक, प्रो० के राजन, डॉ० एन चन्द्रमौलि, डॉ० एम रघुराम, प्रो० अजित कुमार, डॉ० जेनी पीटर, डॉ० यशोधर मथपाल एवं श्री बी०एम० पाण्डेय थे ।

आईजीएनसीए ने इस अवसर पर शैल कला पर सार्थक प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी का एक भाग देश के विभिन्न शहरों में लगाई गई। इस प्रदर्शनी को अकादेमिक समुदायों ने प्रशंसा की । एक विशेष प्रयत्न यह भी किया गया कि देश के बच्चों तक इस कार्यक्रम को पहुँचाया जाए ताकि उन्हें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को जानने का अवसर प्राप्त हो।

केंद्र के 25 वर्ष पूरा होने संबंधी समारोह का एक विशेष आकर्षण डॉ० आनन्द के० कुमारस्वामी थे जिनकी आईजीएनसीए ने 17 पुस्तकें प्रकाशित की । डॉ० कुमारस्वामी पर व्याख्यान आयोजित किए गए तथा पुस्तकें प्रकाशित की गई। रजत जयन्ती के समापन कार्यक्रम पर डॉ० कुमारस्वामी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डॉ० रोगर लिप्से ने व्याख्यान दिया।

सहयोगी कार्यक्रम

आतिसा दीपांकर ज्ञानश्री का जीवन्त दृश्य

10 वीं से 11 वीं शताब्दी के महान बौद्ध संत दार्शनिक आतिश दीपांकर ज्ञानश्री पर एक सेमिनार एवं संगोष्ठी 10 से 18 फरवरी, 2013 को आयोजित की गई । दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो० दिनेश सिंह ने समारोह का उद्घाटन किया एवं मीडिया द्वारा व्यापक रूप से कवर किया गया । इनमें बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बनाई गई सैंड मण्डल एवं बटर स्कल्पचर्स पर प्रदर्शन शामिल थे ।

उत्तर–दक्षिण हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के बीच संवाद के अवसर पर कलाकार

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) को मनाया गया जिसमें श्रीमती चन्द्रेश कुमारी कटोच, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने महिलाओं पर और महिलाओं द्वारा

आयोजित चार प्रदर्शनियों को हरी झंडी दी । इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत से आई महिला कलाकारों की कार्यशाला और महिलाओं के स्वास्थ्य पर सांस्कृतिक बाधाओं पर वर्ष भर चलने वाला राष्ट्रव्यापी अभियान भी आयोजित किया गया ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने उत्तर–दक्षिण हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के बीच संवाद की मेजबानी की । इस समारोह का उद्घाटन सांसद, डॉ0 कर्ण सिंह ने किया । इस कार्यक्रम में दोनों शैलियों के महान संगीतकारों के मध्य जीवंत विचार–विमर्श हुआ । 6 से 10 मई, 2013 तक इस कार्यक्रम को डी डी भारती द्वारा कवर किया गया ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने आकाशवाणी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया ताकि दोनों संस्थानों द्वारा संसाधनों में भागीदारी हो सकें तथा एक साथ मिलकर कार्यक्रम आयोजित कर सकें । इसके अन्तर्गत दो कार्यक्रम आयोजित किए गए : आकाशवाणी के वाद्य वृंद द्वारा पं० रवि शंकर को श्रद्धांजलि एवं लालगुडी जी जयरामन जिनका अप्रैल, 2013 में निर्धन हो गया को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एक संगीत कार्यक्रम ।

वर्ष 2012–13 के दौरान इ०गा०रा०क० केन्द्र की गतिविधियों की प्रभागानुसार इस प्रकार है–

कलानिधि

कलानिधि प्रभाग में चार एकक हैं पहला – क) अनूठा संदर्भ पुस्तकालय, जिसमें सुनीति कुमार चटर्जी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, मेहश नियोगी, मिलादा गांगुली एवं अब डॉ० (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन सहित महान विद्वानों के व्यक्तिगत संग्रह शामिल हैं। ख) इ०गा०रा०क० केन्द्र में प्रमुख भारतीय संग्रहों एवं पुस्तकालयों के अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के माइक्रोफिल्म्स एवं माइक्रोफिशेस के दुर्लभ संग्रह हैं उदाहरण के तौर पर ओरिएंटल पाण्डुलिपि पुस्तकालय, त्रिवेन्द्रम भण्डारकर पुस्तकालय, पुणे एवं ओरिएंटल पाण्डुलिपि पुस्तकालय, मैसूर इत्यादि । इसके अतिरिक्त केन्द्र के पास विदेशी संग्रहों विशेषतः यू०के० जर्मनी, फ्रांस, चीन एवं रूस की माइक्रोफिल्म एवं माइक्रोफिश की सामग्री है। ग) आईजीएनसीए पुस्तकालय में स्लाइडों का एक विशाल संग्रह है । इसमें 100,000 से अधिक स्लाइडें हैं, जिस से यह एकक शोध एवं संदर्भ के लिए एक समृद्ध संसाधन प्रदान करता है। घ) कलानिधि विख्यात हस्तियों के व्यक्तिगत संग्रहों से सामग्री संगृहीत करता है इसमें राजादीन दयाल, हेनरी कार्टियर ब्रेसन, सुनील जाना के छायाचित्र अथवा टेक्सटाइल अथवा श्रव्य–दृश्य की सामग्री इत्यादि हैं। यह एक सांस्कृतिक अभिलेखागार है। इस खण्ड में एक सुसज्जित संरक्षण लैब है । इसके अतिरिक्त, यह खण्ड सभी अंतर्विभागों को आवश्यकतानुसार विभिन्न सामग्री जैसे कागज, कागज की लुगदी, लकड़ी, कपड़ा एवं मानवजातीय वस्तुएँ आदि उपलब्ध करा रहा है, संरक्षण लैब ने अन्य संगठनों का व्यवसायिक मदद भी की। आईजीएनसीए का डिजिटल अभिलेखागार सॉफ्ट फार्मेट में आईजीएनसीए के प्रलेखनों एवं शोधों का भण्डार गृह है। मीडिया सेन्टर के नाम से यह एकक, आईजीएनसीए में जीवनशैली अध्ययनों एवं कार्यक्रमों के प्रलेखनों की वास्तविक प्रति रखता है। ङ) सांस्कृतिक सूचना विज्ञान लैब (सीआईएल) आईजीएनसीए के अकादेमिक संसाधन का एक हिस्सा है। यह अकादेमिक कार्य और प्रौद्योगिकी के बीच एक इण्टरफेस के रूप में काम करता है। सीआईएल की परियोजनाएँ आईजीएनसीए की अकादेमिक परियोजनाओं के शोध प्रलेखनों में से तैयार की जाती हैं।

कलानिधि का मुख्य उद्देश्य कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री को प्रमुख संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करना है। इसे इ०गा०रा०क० केन्द्र के लिए सहायक सेवाएँ प्रदान करने के लिए बनाया गया । यह प्रभाग भारत और विदेश से विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए राष्ट्रीय सुविधा केंद्र के रूप में भी कार्य करता है।

संदर्भ पुस्तकालय में मानविकी और कलाओं के क्षेत्र में स्रोत सामग्री का विशाल संग्रह है। इसमें पुस्तकें, जर्नल, संस्कृत, पालि, फारसी और अरबी में लिखी अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्म, फोटोग्राफ तथा विभिन्न विषयों पर स्लाइडें हैं और इन विषयों में पुरातत्व, दर्शन, धर्म और अनुष्ठानिक अध्ययन, इतिहास और मानव विज्ञान, कला और साहित्य तथा लोक, पशुचारण और सामुदायिक अध्ययन शामिल हैं।

कलानिधि प्रभाग की गतिविधियों की ब्योरेवार रिपोर्ट (2012–13) इस प्रकार है:–

(क) संदर्भ पुस्तकालय

पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का अर्जन

वर्ष के दौरान पुस्तक क्रय समिति की सिफारिशों के आधार पर संदर्भ पुस्तकालय द्वारा 1652 पुस्तकें खरीदी गई । मानक अंतर्राष्ट्रीय रूप (मार्क–21) का इस्तेमाल करते हुए इनका वर्गीकरण करके कैटलॉग (सूची) बनाया गया ।

पत्रिकाएँ

पुस्तकालय ने 204 पत्रिकाएँ मंगवाई । उनके विषय हैं– मानवविज्ञान, वास्तुकला, कला, ग्रन्थ विज्ञान, पुस्तक समीक्षा, कम्प्यूटर और सूचना विज्ञान प्रौद्योगिकी संरक्षण, संस्कृति, नृत्य, लोक साहित्य, इतिहास, मानविकी, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान, भाषा विज्ञान, साहित्य संग्रहालय अध्ययन, मुद्राशास्त्र, प्राच्य अध्ययन, मंच कला, दर्शन शास्त्र, पुत्तल कला, धर्म, विज्ञान, समाज शास्त्र, समाज विज्ञान, थिएटर एवं क्षेत्र अध्ययन ।

पत्रिकाओं के 2500 से अधिक संस्करण प्राप्त किए

गए और 525 पिछले संस्करणों के खण्ड की अवाप्ति की गई। पुस्तकालय की निम्नलिखित आनलाइन डाटा बेस है और शोधकर्त्ताओं द्वारा इन्ट्रानेट के जरिए इसे देखा जा सकता है ।

1. मानविकी अंतर्राष्ट्रीय कम्प्लीट
2. विल्सन आर्ट एब्सट्रैक्ट
3. जे एस टी ओ आर
4. जे–गेट, कला और मानविकी

कलानिधि पुस्तकालय एसोसिएशन परिसंघ एवं संस्था (आईएफएलए), 'द हेग' सहित विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का संस्थागत सदस्य है ।

डिजिटल अभिलेखागार

सी–डेक पुणे के सहयोग से डिजिटल रिपाजिटरी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर नाम से एक परियोजना शुरु की गई है। इसके एक भाग के रूप में लगभग 1000 दुर्लभ पुस्तकें और 600 डीवीडी केन्द्र के सर्वर पर अपलोड की गई हैं।

परिचालन और संदर्भ

वर्ष के दौरान कलानिधि संदर्भ पुस्तकालय ने 181 सदस्यों को प्रवेश दिया पुस्तकालय का उपयोग 3000 से अधिक विद्वानों ने किया । पुस्तकालय विज्ञान के छात्रों के अनेक समूह संदर्भ पुस्तकालय में आए जिनमें निफ्ट से पुस्तकालय व्यावसायिकों की 22 सदस्यों की टीम, गुजरात विश्वविद्यालय से 25 छात्र और पांडिचेरी विश्वविद्यालय से 48 छात्र शामिल थे ।

ग्रन्थसूची एकक

वर्ष के दौरान महाभारत पर ग्रन्थ संकलित किया गया। इसमें दो खण्ड हैं– 1) 1026 रिकार्डों वाली मुद्रित सामग्री और 2) गैर मुद्रित सामग्री जिसमें 667 पाण्डुलिपियाँ है और 231 स्लाइडें हैं। इसमें लेखक के नाम से भी सूची है। ग्रंथ सूची को बड़े पुस्तकालयों में वितरित किया गया है ।

वर्ष के दौरान भारतीय पुरात्त्व विज्ञान की वार्षिक ग्रंथ सूची (एबीआईए) प्रकाशन में पर्याप्त प्रगति हुई । लगभग 1700 ग्रंथ सूची रिकार्डों को सीडीएस–आइसिस का इस्तेमाल करके प्रकाशन के खण्ड IV के लिए संकलित किया गया । इन रिकार्डों का संपादन चल रहा है । कर्न संस्था लिडेन से प्राप्त अनुरोध के आधार पर एबीआईए के 19 पुराने खण्डों को भी सीआईएल की सहायता से डिजिटाइज किया गया और संस्था को भेजा गया ।

एबीआईए को 1926–73 के दौरान कर्न संस्था, लिडेन द्वारा प्रकाशित किया गया। 1996 में अंतर्राष्ट्रीय एशियाई अध्ययन संस्थान (आईआईएएस), लिडेन ने अन्य के सहयोग से इस ग्रंथ–सूची के संकलन को पुनः शुरु करने का प्रस्ताव किया । नए पाठ को एबीआईए साउथ एण्ड साउथ एशियन आर्ट एण्ड आर्केलोजी इंडेक्स (एबीआईए इंडेक्स)के नाम से जाना जाता है । इ०गा०रा०क०केन्द्र, इस परियोजना के लिए गत वर्ष नोडल कार्यालय था।

पाण्डुलिपि एकक

पाण्डुलिपि पुस्तकालय में 2,50,000 संस्कृत की पाण्डुलिपियाँ हैं जिनमें से 2,26,000 पाण्डुलिपियों की कैटलागिंग रिकार्ड ओपेक (आन लाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग) के जरिए उपलब्ध है। कैटलॉग को लिब्सिस प्रीमिया डाटाबेस के रूप में मार्क–21 में तैयार किया गया है ।

(ख) रिप्रोग्राफिक एकक

कलानिधि का रिप्रोग्राफिक एकक मुख्यतः ऐसी दुर्लभ और अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्म बनाने के लिए जिम्मेदार है जो विरासत पुस्तकालय में और देश भर में फैले व्यक्तिगत संग्रहों में उपलब्ध है ।

वर्तमान में यह एकक निम्नलिखित स्थानों पर कार्यरत है।

(i) ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर, कर्नाटक

(ii) श्री जैन मूदबिद्री मठ, कर्नाटक

(iii) राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (आरओआरआई), उदयपुर, राजस्थान

(iv) के०एस० ग्रन्थशाला, त्रिसूर, केरल

इस एकक ने निम्नलिखित स्थानों पर नई परियोजनाओं को अंतिम रूप दिया :

(i) विद्यामाधम बालिया नारायनन नंबूदरी – दक्षिणमूर्ति ट्रस्ट, पलक्कड़, केरल

(ii) बडक्के माधम ब्रह्मस्वम, त्रिशूर, केरल

(iii) सुक्रीन्द्र ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, एर्णाकुलम, केरल

(ग) स्लाइड एकक

इस एकक के पास भारतीय और विदेशी स्रोतों से प्राप्त् संग्रहों से ली गई स्लाइडें हैं।

कलानिधि के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य एक वृहत फोटोग्राफ और स्लाइड पुस्तकालय स्थापित करना है। स्लाइड एकक ने लगभग 7000 छवियाँ विभिन्न स्रोतों से प्राप्त की । इन स्रोतों में भारतीय कला और वास्तु पर प्रसिद्ध फोटो– इतिहासकार श्री बिनय बहल से प्राप्त छवियाँ भी शामिल हैं। वर्ष के दौरान 852 छवियाँ की अवाप्ति निम्नलिखित संग्रहालय के संग्रहों से की गई :–

(i) अंबारी पुरातत्व स्थल, गुवाहाटी, असम

(ii) जिला संग्रहालय, तेजपुर, असम

(iii) राज्य संग्रहालय, इटानगर, अरुणाचल प्रदेश

(iv) जिला संग्रहालय, बोमडिला, अरुणाचल प्रदेश

कुछ महत्त्वपूर्ण छवियाँ, गृह स्रोतों से महिला शिल्पकारों के बारे में और जोड़ी गईं।

अरुणाचल प्रदेश की भूमि, संस्कृति और लोगो पर स्लाइडों को डिजीटाइज किया गया और 4107 स्लाइडों की 69 डीवीडी प्राप्त हुई । अब इस एकक में 98,425 से अधिक स्लाइडें हैं जिनमें डिजिटल छवियाँ और फोटो निगेटिव भी शामिल है ।

सांस्कृतिक अभिलेखागार

इ.गा.रा.क. केंद्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार में दुर्लभ सामग्री का संग्रह है जिनमें मानव जाति विज्ञान सामग्री, स्क्रॉल, फोटोग्राफ, पेटिंग्स और व्यक्तिगत संग्रह शामिल है । इस वर्ष निम्निलिखित कार्यकलाप किए गए:–

1. अभिलेखीय संग्रहों की शिफ्टिंग और खोलने का बड़ा कार्य पूरा किया गया ।
2. हाल ही में प्राप्त संग्रहों यथा –डॉ० आनंद के कुमार–स्वामी और डॉ० कपिला वात्स्यायन के संग्रह का प्रलेखन कार्य वर्ष के दौरान शुरु किया गया ।
3. कूर्ग संग्रह में मूल्यवान आभूषणों की फोटो की सूची बनाने का कार्य पूरा किया गया ।
4. अभिलेखागार में वीडियो फिल्म का डिजिटाइजेशन कार्य चल रहा है। अब तक 100 वीडियो फिल्मों को डिजिटाइज किया जा चुका है ।

संरक्षण एकक

इ०गा०रा०क० केन्द्र का संरक्षण एकक एक आधुनिक और तकनीकी रूप से सुसज्जित केंद्र है। यह आंतरिक संरक्षण की आवश्यकताओं को पूरा करता है और अन्य संस्थाओं के लिए भी कार्य लेता है । वर्ष के दौरान एकक की निम्नलिखित गतिविधियाँ रहीं :

सेमिनार

संग्रहालय सुरक्षा

संरक्षण एकक ने 21–22 फरवरी, 2013 को इ०गा०रा०क० केन्द्र में संग्रहालय सुरक्षा पर दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया । इसका उद्घाटन राष्ट्रीय संग्रहालय के महानिदेशक एवं कुलपति, राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, डॉ० वीनू ने किया ।

देश भर से आए विशेषज्ञों और विद्वानों ने सेमिनार के दौरान तीस अभिपत्र प्रस्तुत किए।

संग्रहालय सुरक्षा के सम्मेलन के अवसर पर विशेषज्ञ

व्याख्यान देने वालों में थे– डा0 के0 मृत्युंजय राव, विभागाध्यक्ष, ललित कला, योगी वीमान यूनिवर्सिटी, कडप्पा, आंध्रप्रदेश, डॉ0 वी रमन्ना, सहायक प्रोफेसर, संग्रह विज्ञान विभाग, एम.एस. यूनिवर्सिटी, बरोडा, सुश्री जोई रॉय घोष, सहायक संग्रहपाल, विक्टोरिया मेमोरियल हाल, कोलकाता, डा0 वी. जयराज, निदेशक, हेपजिब्राह विरासत संरक्षण संस्थान, चौन्ने, श्री मनोज कुमार, चर्म प्रसाधक (टैक्सीडर्मिस्स), क्षेत्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय, भोपाल, मध्य,प्रदेश और डा0 सीमा यादव, एसोसिएट प्रोफेसर, डी आई एच आर एम, नई दिल्ली । सेमिनार में विद्वानों, संग्रह/अभिलेख पालों, संरक्षकों छात्रों और संग्रहालय सुरक्षा कर्मियों ने भाग लिया । विषयों में संग्रहालय की वस्तुओं की चोरी और हस्तक्षेप, नुकसान, क्षति, आग तथा अन्य दुर्घटनाओं से बचाव तथा दर्शकों और स्टाफ की सुरक्षा शामिल थे। सेमिनार में सांस्कृतिक संस्थाओं तथा पुरातत्वीय स्थलों के सरोकारो पर चर्चा की गई । सेमिनार की कार्यवाही को संग्रहालय की सुरक्षा और बचाव के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन तैयार करने हेतु संगत रुप दिया जा रहा है ।

कार्यशाला

प्रेलखन के विशेष संदर्भ में भण्डारण का पुनर्गठन

आईजीएनसीए ने अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृति संपत्ति संरक्षण और पुर्नस्थापना अध्ययन केन्द्र के सहयोग से दिल्ली में 15–16 अप्रैल, 2013 को प्रलेखन के विशेष संदर्भ में भण्डारण का पुर्नगठन पर दो सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की ।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण की जिम्मेदारी वहन करने वाले 'इकराम' ओर 'यूनेस्कों' ने संयुक्त रूप से ऐसी प्रणाली तैयार की है जिससे छोटे और मध्यम आकार के संग्रहालयों को अपने भण्डाकरण को पुर्नगठित करने में मदद मिलती है।

कार्यशाला के दौरान 15 युवा भारतीय व्यावसायिकों को जिसमें पुस्तकों की अवाप्ति, मुख्य विषय सूची, अवस्थान प्रणाली, पुस्तक संचलन, दो आनुषंगिक पुस्तक सूची और अलग–अलग फाइलें तैयार करने सहित संपूर्ण प्रलेखन प्रणाली तैयार करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। मामला विशेष के अध्ययन के रूप में आईजीएनसीए की जनपद संपदा संग्रह के भण्डारण को लिया गया। इस कार्यशाला ने संग्रहों को पुनः व्यवस्थित किया और केन्द्र द्वारा शोधार्थियों और दर्शकों की सुविधा के लिए इसका सक्रिय इस्तेमाल होने दिया । कैटलूना का राष्ट्रीय संग्रहालय इस कार्यक्रम में भागीदार था ।

प्रदर्शनी

राजा दीन दयालः गुवाहाटी में आयोजित आईजीएनसीए संग्रह से स्टूडियो अभिलेख ।

इ.गा.रा.क. केंद्र के पास राजा दीन दयाल की ग्लास प्लेट निगेटिक का एक दुर्लभ संग्रह है। इस बड़े संग्रह में से चुनिंदा प्रिन्टों की एक बड़ी प्रदर्शनी 2011 में आयोजित की गई थी। राज्य कला दीर्घा, गुवाहाटी में 11–16 मार्च, 2013 तक 'राजा दीन दयाल' आईजीएनसीए संग्रह से स्टूडियों अभिलेख' नाम से इस प्रदर्शनी का एक भाग आयोजित किया गया । प्रदर्शनी बहुत सफल रही ।

मीडिया एकक

मीडिया एकक, इ.गा.रा.क. केंद्र के विजन और संगठन का अभिन्न अंग है । यह इ.गा.रा.क. केंद्र के अन्य सभी प्रभागों के कार्यक्रमों के लिए एक महत्व पूर्ण भूमिका निभाता है ।

संदर्भ पुस्तकालय के सहायक के रूप में इसने भारत और विदेशों के अनेक विशिष्ट विद्वानों के साक्षात्कारों का प्रलेखन किया है । इन विद्वानों में मुल्कराज आनंद, कल्यानी कुट्टियम्मा, बी.वी. कामत और जोहरा सहगल शामिल हैं ।

इसने उस्ताद फहीमुद्दीन डागार जैसे महा संगीतकारों की प्रस्तुतियों की रिकार्डिंग की है ।

मीडिया एकक, जीवन शैली अध्ययन के प्रलेखन के लिए जनपद संपदा प्रभाग के कार्यक्रमों का एक अपरिहार्य अंग है ।

इस वर्ष मीडिया एकक द्वारा किए गए बड़े प्रलेखन कार्य थे– 'घराना संगीत' और 'भारत की साध्वियॉ' परियोजना। मीडिया एकक ने सभी प्रभागों की अनुसंधान परियोजनाओं का दृश्य/श्रव्य प्रलेखन का

कार्य हाथ में लिया और सभी कार्यक्रमों के लिए दृश्य श्रव्य कार्यक्षेत्रों में सुविधाएं प्रदान की ।

मीडिया एकक द्वारा तैयार किए गए 50 घण्टे का वृत्त चित्र डी डी भारती पर प्रसारित किए गए । कुछ प्रसारित किए गए कार्यक्रम इस प्रकार थे–

बी डी गर्ग के प्रतिष्ठित संग्रह को पूरी तरह से जाँचा परखा गया और इनकी सभी होल्डिंग की अवाप्ति पूरी की गई। अवाप्ति सामग्री में फोटो, नेगेटिव, पोस्टर्स, लाबी कार्ड आदि शामिल थे । इस संग्रह को इ.गा.रा. क. केंद्र ने पिछले वर्ष प्राप्त किया था। इस वर्ष 3839 फोटो, निगेटिव, बुकलेट, हैण्ड्बल और 250 पत्रिकाओं की सूची का डाटा एंट्री कार्य पूरा किया गया ।

इ.गा.रा.क. केंद्र के पास राजा दीन दयाल की ग्लास प्लेट निगेटिव का एक दुर्लभ संग्रह है। इस बड़े संग्रह में से चुनिंदा प्रिन्टों की एक बड़ी प्रदर्शनी 2011 में आयोजित की गई थी। राज्य कला दीर्घा गुवाहाटी में 11–16 मार्च,2013 तक राजा दीन दयाल, आईजीएनसीए संग्रह से स्टूडियों अभिलेख नाम से एक प्रदर्शनी का एक भाग आयोजित किया गया । प्रदर्शनी बहुत सफल रही ।

दूरदर्शन के जरिए प्रसारण

इंदिरा गॉधी राष्ट्रीय कला केंद्र के रजत जयंती समारोह के अवसर पर आइजीएनसीए और दूरदर्शन के बीच समझोता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए ताकि डीडी भारती पर आईजीएनसीए के कार्यक्रमों को नियमित आधार पर प्रसारित किया जा सके। प्रसारण 19 नवम्बर, 2012 को जोहरा अनमास्क्ड से शुरू हुआ, यह कार्यक्रम जानी–मानी रंगमंच हस्ती जोहरा सहगल का डॉ0 कपिला वात्स्यायन द्वारा लिया गया साक्षात्कार था। आईजीएनसीए के कार्यक्रमों का प्रसारण डीडी भारती पर वर्ष के दौरान जारी रहा ।

डिजिटीकरण

(i) इ.गा.रा.क. केंद्र के 170 आडियो कैसटों को अपने स्रोतों से डिजिटाइज किया गया।

(ii) सांस्कृरतिक अभिलेखागार से डा0 (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन के निजी संग्रह से पुराने फार्मेट के 427 वीडियो टेप को डिजिटाइज किया गया और फार्मेट को डी वी सी ए एम में उन्न्त किया गया ।

डी वी डी प्रकाशन

1) 500 डी वी डी प्रतियों का बड़ा प्रकाशन प्रत्येक की छः फिल्म और 100 प्रतियों का पुनः प्रकाशन – प्रत्येक की चार फिल्म जिन्हें, जनपद संपदा प्रभाग के वार्षिक दिवस 23 जुलाई, 2013 को विमोचन के लिए पूरा किया गया ।

महत्वपूर्ण प्रलेखन

(i) मठातुर, त्रिशुर, केरल में 1–6 अप्रैल, 2012 तक 'अतिरात्रम यज्ञ' का प्रलेखन पूरा किया गया ।

(ii) सुश्री मोहापोरा (मीरासेन) का रामपुर (उ0प्र0) में 6 जून, 2012 को साक्षात्कार पूरा किया गया ।

उपस्करों का उन्नयन

मीडिया एकक के लिए उच्च गुणवत्तार का आडियो/वीडियो उपस्कर खरीदने के लिए मेसर्स बीईसीआइएल जो सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का एक सार्वजनिक उपक्रम है, के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं । उपस्कर की सुपुर्दगी अगस्त 2013 में हो जाएगी ।

सामान्य रिपोर्ट

मीडिया एकक ने इ.गा.रा.क. केंद्र के विभिन्न। कार्यक्रमों और परियोजनाओं पर दैनंदिन संपादन और अन्य निर्माणोत्तर कार्य पूरा किया ।

इ.गा.रा.क. केंद्र में आयोजित प्रदर्शनियों एवं सेमिनारों के लिए कलानिधि का योगदान

कलानिधि इ.गा.रा.क. केंद्र के अकादमी कार्यक्रमों के लिए अपरिहार्य है । सम्मेलनों एवं अन्य कार्यक्रमों के दौरान कलानिधि द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है ।

1. दिसंबर 2012 में शैल कला सम्मेलन के दौरान इस विषय पर पुस्तकें प्रदर्शित की गई थी ।

2. 'भीम बैठका की शैल कला' पर डा0 यशोधर

मथपाल द्वारा वाटर कलर से पुनः निर्मिति की प्रदर्शनी कलानिधि सांस्कृतिक अभिलेखागार से आई थी ।

3. आनन्द कुमार स्वामी द्वारा और उन पर दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण पुस्तकों की प्रदर्शनी 19 मार्च 2013 को रतन परिमू द्वारा दिए गए व्याख्यान के दौरान लगाई गई ।

4. 20 मार्च से 31 मार्च 2013 तक प्रलेखन अधिकारी ने पटियाला पंजाब का दौरा किया और पारंपरिक फुलकारी कसीदाकारी का प्रलेखन किया। यह प्रलेखन, स्लाइड संग्रह में जोड़ा गया ।

5. सितंबर 2012 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई ।

6. अक्टूबर 2012 में अमरनाथ यात्रा पर सुश्री शीला राणा का व्याख्यान आयोजित किया गया ।

कलानिधि प्रभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान

(i) 8 अगस्त, 2012 को डॉ0 उर्मिला शर्मा द्वारा कंटीब्यूशन ऑफ ठाकुर जयदेव सिंह इन इंडियन म्यूजिकल वर्ल्ड पर व्याख्यान ।

(ii) 25 मई, 2012 को विदुषी कृष्णा भट्ट द्वारा शास्त्रिक कैनन विस–ए–विस

(iii) करंट प्रैक्टिस ऑफ इंडियन क्लासिकल म्युजिक पर व्याख्यान । 27 अप्रैल, 2012 को पं0 विद्याधर व्यास, पूर्व कूलपति, भरतखण्डे म्युजिक इंस्टीट्यूट, लखनऊ द्वारा म्यूंजिक इन इंडियन आर्ट पर व्याख्यान ।

(iv) श्री मुहम्मद के0के0 पूर्व निदेशक (उत्तर) भारतीय पुरातत्वं सर्वेक्षण (एएसआई) ने 7 फरवरी, 2013 को चम्बल घाटी में डकैती, अवैध खनन के दुष्प्रभावों और मंदिरों के संरक्षण पर बढ़िया जानकारी दी । उन्हों ने बताया कि कैसे डाकू अवैध खनन में लगे हुए थे और स्थानीय आबादी के लिए समस्याएँ पैदा कर रहे थे और कैसे एएसआई ने इन चुनौतियों का सामना किया और स्मारक की सुरक्षा की । किसी समय बटेश्वर उपेक्षित स्थल था किंतु एएसआई के सम्मिलित प्रयास से अब यह पयर्टन स्थल बन गया है ।

सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान लैब

सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान लैब को कला की शाखाओं और प्रलेखन में नई टेक्नोलाजी के उपयोग, विकास और प्रदर्शन के लिए सूचना टोक्रोलाजी के बीच ताल–मेल स्थापित करने के लिए बनाया गया था । इस अवधि के दौरान कला और संस्कृति में टेक्नोलाजी के अनुप्रयोग के क्षेत्र में आईजीएनसीए द्वारा किए गए कुछ विशिष्ट कार्य निम्न प्रकार से हैः–

सांस्कृतिक विषयों का डिजिटल प्रसार

विषयगत मल्टीमीडिया डीवीडी का इलेक्ट्रॉनिक प्रसार अनेक विषयगत सीआईएल मल्टीमीडिया परियोजनाओं के निर्माण में लगा हुआ है । प्रत्येक परियोजना में परियोजना विशेष क्षेत्र में लब्ध प्रतिष्ठत विद्वान लगे हुए हैं । इन पर परियोजनाओं को आम जनता में डीवीडी के जरिए प्रसारित किया गया है । कुछ परियोजनाओं की स्थिति इस प्रकार हैंः–

इ.गा.रा.क. केंद्र ने स्मारक, साहित्यिक सृजन, लोक विषय, धार्मिक अनुष्ठान और प्रतिमा विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हुए छह बड़ी मल्टीमीडिया परियोजनाएं शुरू की गई थी। इन परियोजनाओं में से तीन परियोजनाओं पर स्थितिगत रिर्पोट इस प्रकार हैः

1. वृहदीश्वर मंदिर

जनपद संपदा प्रभाग की क्षेत्र परियोजना के अंतर्गत बृहदीश्वर, इ.गा.रा.क. केंद्र की बहुत महत्व पूर्ण और जटिल परियोजना है । तमिलनाडु के तंजावुर में वृहदीश्वर मंदिर को बहुविषयक अध्ययन के लिए पहचाना गया था । इस परियोजना की संकल्पना डा0 (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन ने की थी । परियोजना के लिए विषय–गत विद्वान डा0 आर नागास्वामी हैं।

इस चल रही परियोजना में इस वर्ष निम्नलिखित कार्य पूरे किए गएः

मंदिर के 'प्रारंभिक' भाग को सभी भागों को ध्यान में रखते हुए फिर से तैयार किया गया है । तदनुसार, नए ग्राफिक, प्रतिबिम्बों एनीमेशंस संगीत इत्यादि को तैयार किया गया । प्रारूप की पूरी तरह से समीक्षा की गई तथा 20 मिनट के लम्बे वीडियो में एकीकृत किया गया।

स्मारक भाग में, प्रत्येक वेदी और उप वेदी के ब्यौरे अर्थात् विमान, मण्डप, चंडिकेश्वर वेदी, बाडा, आन्तरिक गोपुरम, बाह्यगोपुरम, अम्मन वेदी. सुब्रह्मणियम वेदी, नदी मण्डपम, गणेश वेदी, नटराज वेदी, ध्वजस्तम्भ, तोरण मेहराब, एवं करुवर्देवर वेदी उनकी वास्तुकला, प्रतिमाशास्त्र, भित्ति चित्र तथा शिलालेख को जानने से पहले एक स्थल तैयार किया गया ।

'प्रतिमा विज्ञान' खण्ड और नृत्य 'कारण' के लिए जानकारी नक्शा लगभग पूरा है । विशेषज्ञ द्वारा ऑडियो रिसाइटेशन अब शामिल किया जाएगा । धार्मिक अनुष्ठान और उत्सव तथा संगीत और नृत्य भी समन्वय की प्रक्रिया में है।

2. गीत गोविन्द

गीत गोविन्द इ.गा.रा.क. केंद्र का लंबे समय से चला आ रहा कार्यक्रम है । इसे छह प्लेट फार्म पर प्रस्तुत किया गया है, गीत गोविन्द के केवल छह गीतों और प्रदर्शनों से मल्टीमीडिया के जरिए यह पता चलता है कि किस प्रकार श्रोता/प्रेक्षक भारत में गीत गोविन्द के रेन्ज अथवा प्रसार से परिचित हो सकता है और कैसे यह गीत भारत के चित्रात्मक, संगीत और नृत्य परंपराओं में घर कर गया । कुछ वर्ष पहले (1998) इ.गा.रा.क.केंद्र ने छह प्लेट फार्म तैयार किया था जहाँ से कोई दर्शक संगीत, नृत्य अथवा पेंटिंग के जरिए प्रत्येक की अलग–अलग शैली में गीत से

मेवाड़ शैली की चित्रकला में गीत गोविन्द

परिचित हो सकता है । अब सीआईएल ने इण्टरैक्टिव मल्टी मीडिया डीवीडी निकालने पर कार्य शुरू किया है ।

इस परियोजना की संकल्पना डा0 (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन ने की थी और बहुत से विद्वानों ने उनके इस कार्य में सहायता की । इस परियोजना पर स्थितिगत रिपोर्ट इस प्रकार है: इसी विषय पर पेंटिंग का चयन भी पूरा हो गया है। 'प्रांरभ' का कार्य एकीकरण के अंतिम चरण में है ।

3. देवनारायण

देवनारायण एक लोक देवता का नाम है जिसकी पूजा राजस्थान और मध्य प्रदेश के गूजरों के गड़रिया समुदायों द्वारा की जाती है ।

इस परियोजना की संकल्पना डा0 आदित्य मलिक ने की थी । इस परियोजना पर प्रोफेसर आदित्य मलिक के साथ इस बात पर चर्चा की गई है कि वह जून और दिसम्बर, 2013 में अपने भारत आगमन के दौरान परियोजना के विषय का सत्यापन करें और परियोजना के छूट गए अंश को पूरा करें ।

कला सम्पदा

कला संपदा, प्रयोक्ता–अनुकूल इंटरफेस से एकीकृत विषय और सूचना का डिजिटल रिपाजिटरी है । यह अनुप्रयोग, इ.गा.रा.क. केंद्र की समृद्ध अभिलेखीय संग्रह का प्रलेखन, परिरक्षण, प्रबंधन और प्रसार के लिए तैयार किया गया है ।

ओ0आर0एल0एस0 श्रीनगर, इलाहाबाद संग्रहालय, विश्व भारती, ऐतिहासिक और पुरातनिक अध्ययन

देव नारायण का एक भाग

निदेशालय (डीएचएएस) कामरूप अनुसंधान समिति इत्यादि से 26377 डिजिटल पाण्डुलिपियॉ हैं। शोधकर्ता पाण्डुलिपियों को यादृच्छिक रूप से पता लगा सकते है या शीर्षक, लेखक, टीका, टीकाकार, रिपाजिटरी, विषय, भाषा और निदर्शन जैसे शब्दकोश के जरिए खोज सकते हैं । रवीन्द्रनाथ टैगोर की 51,500 से अधिक दृश्य, डिजिटाइज पेंटिंग्स आदि को आनलाइन पहुंच के लिए एकीकृत किया गया है । 586 एथनोग्राफिक वस्तुओं का ब्यौरेवार मेटाडाटा, 99 वीडियो डाक्यूमेंटरी और 8 आडियों क्लिप सुगम खोज के लिए एकीकृत की गई है । इ.गा.रा.क. केंद की विभागीय (इन हाउस) रिपोर्ट (भारत की सांस्कृतिक मैपिंग), ग्रंथ सूची, न्यूजलेटर 'विहंगम' और जर्नल कलाकल्प आदि को लिंक किया गया है ताकि शोधार्थियों को सूचना ग्रहण करने में सहायता मिल सके ।

सांस्कृतिक कार्टोग्राफी

इ.गा.रा.क. केंद्र की तीन कर्मचारियों को एनएटीएमओ और एनआइआइटी जीआइएस में प्रशिक्षण प्रदान किया गया । उड़ीसा में पुरातत्व स्थल के लिए एक डाटा बेस का संकलन किया गया और पूर्वोत्तर राज्य के डाटाबेस का संकलन किया जा रहा है । उड़ीसा के अंशतः सहबद्ध विषय का प्रदर्शन, सार्क अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया ।

इ.गा.रा.क. केंद्र की वेबसाइट

इ.गा.रा.क. केंद्र द्वारा आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों के बारे में दर्शकों की सूचना के लिए वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन किया जाता है । एन.आई.सी. की सांख्यिकी के अनुसार अक्टूबर, 2012 से मार्च 2013 की अवधि के दौरान वेबसाइट पर औसत हिट प्रतिमाह 26,75000 था ।

क) राजस्थान के अनेक जिलों से पुरातात्विक स्थलों के ब्योरों यथा झालवाड (250 स्थल) करौली (360 स्थल) बूंदी (400 स्थल) भीलवाड़ा (530 स्थल) सवाई माधोपुर (483 स्थल) नागौर (491 स्थल) उदयपुर (566 स्थल) की पीडीएफ रिपोर्ट बनाकर वेबसाइट पर डाले गए तथा उनकी डिजिटल छवियों, वीडियो क्लिपों को लिंक किया गया ।

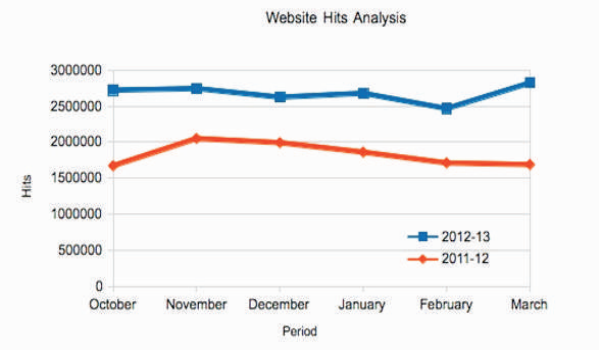

(ख) इ.गा.रा.क. केंद्र की रजत जयंती समारोह की वीडियो क्लिप वेबसाइट पर अपलोड की गई ओर यूटूब पर तीन क्लिपों से लिंक गया ।

(ग) भारतीय शास्त्रीय संगीत माला पर डाक्यूमेंटरी (17 वीडियो क्लिप) को संबंधित पृष्ठों से लिंक किया गया ।

(घ) 'संगीत माला पर सार्वजनिक व्याख्यान' की तीन वीडियो क्लिपों को यू टूयूब पर पूरी व्याख्यान माला सहित आडियो फारमेट में अपलोड की गई ।

(ड) शैल कला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2012 के पूरे ब्योरे 29 वीडियो क्लिप के साथ साइट पर लिंक किए गए ।

(च)'स्मारक व्याख्यान' पृष्ठ् वेबसाइट पर अद्यतन किया गया ।

डिजिटल स्रोत आवर्धन

1. इ.गा.रा.के. केंद्र के संग्रह से पाण्डुलिपियों के 1,27,585 पन्ने वाले 720 माइक्रोफिल्म रोलों को डिजिटाइज किया गया ।

2. 1,92,238 पृष्ठों (पुस्तको, रिपोर्टो, कैटलाग और फाइलों की) को डिजिटाइज किया गया है।

3. एएसआई के कुल 27947 दुर्लभ फोटो (50,000 में से) को अब तक डिजिटाइज किया जा चुका है (इस परियोजना को एएसआई कार्यालय के शिफ्ट होने के कारण सितंबर, 2012 से रोक दिया गया था ।

अन्य कार्यकलाप

1. राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईफटी) के अधिकारियों के लिए इ.गा.रा.क. केंद्र में जुलाई, 2012 में क्षमता निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई ।

2. सांस्कृतिक संस्थानों के कार्यों की समीक्षा करने के लिए संसदीय समिति ने जुलाई, 2012 में इ.गा.रा.के. केंद्र का दौरा किया ।

3. 22–24 अगस्त, 2012 तक कोलंबो, श्रीलंका में आयोजित 'आर्केलाजी आफ बुद्धिज्मः रिसेन्ट् डिसकवरी इन साउथ एशिया' पर सार्क इंटरनेशनल सम्मेलन में कल्चरल कार्टोग्राफी – 'प्रास्पेक्ट एण्ड पेरिल्स' नाम से अभिपत्र प्रस्तुत किया गया।

कलाकोश

कलाकोश प्रभाग केंद्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन स्कन्ध के रूप में कार्य करते हुए कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विधापरक संदर्भों में अनुसंधान करता है । यह शास्त्र को संदर्भ के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक सॉस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है ।

कार्यक्रम कः

कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का कोश) कलातत्त्वकोश भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का एक कोश है । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यापक शोध एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ विचार–विमर्श के पश्चात लगभग 250 सकंल्पनाओं के शब्दों की एक सूची तैयार की गई है । प्रत्येक संकल्पना की गवेषणा विभिन्न विषयों के लगभग 300 मूलग्रन्थों से की जाती है । इस श्रृखला का प्रथम ग्रन्थ वर्ष 1988 में प्रकाशित हुआ था और तब से अब तक व्याप्तिम शब्द, अंतरिक्ष और समय, मुख्य तत्व, प्रकृति का आविर्भाव – क्रमशः रूप/आकार और बाह्याकृति/सांकेतिक रूप, विषय– वस्तु पर इसके छः खण्ड़ प्रकाशित हो चुके हैं । इस वर्ष कलातत्वकोश के लिए प्राप्त लेखों–खण्ड VII का संपादन कार्य जारी रहा । आने वाले खण्ड के लिए विषय संबंधी कार्ड भी तैयार किए गए।

'सुब्स्रातम / अबोडः स्थान/आयतन' विषय पर खण्ड– VII में निम्लिखित शब्द हैः–

1. स्थान/ आयतन
2. तीर्थ
3. कुण्ड
4. स्क्म्भ /स्तम्भ
5. कोण/आशीर/व्रत
6. सीति/चैत्य/स्तूप
7. सन्निवेश/ समस्थान

संदर्भ कार्ड्स

आईजीएनसीए के वाराणसी स्थित पूर्वोत्तर क्षेत्रीय कार्यालय का प्रमुख कार्य कलाकोश परियोजना के अन्तर्गत चल रहे अनेक परियोजनाओं के लिए संदर्भ कार्ड तैयार करना है। इस वर्ष विभिन्न ग्रन्थों से चुनकर 2869 टाइप किए गए कार्ड (कलातत्वकोश खण्ड–VIII पर 252 कार्ड, कलातत्वकोश खण्ड– IX पर 160 कार्ड तथा अन्य विषयों पर 2232 कार्ड) तैयार किए गए। वर्तमान में वाराणसी केन्द्र में 65456 कार्ड हैं ।

कार्यक्रम 'ख' : कलामूलशास्त्र

(भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों की श्रृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा चल रहा कार्यक्रम कलामूलशास्त्र श्रृंखला है । यह एक दीर्घकालिक शोध और प्रकाशन कार्यक्रम है । इस महत्वाकांक्षी श्रृंखला में वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला से लेकर संगीत, नृत्य और रंगमंच तक भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों का समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका–टिप्पणियों, विषय–सूची एवं अंग्रेजी अनुवाद (कुछ मामलों में हिंदी में) सहित, उन्हें ग्रन्थमाला में प्रकाशित किया जाता है ।

यह इ.गा.रा.क. केंद्र का बहुत महत्वपूर्ण कार्यक्रम है । इसमें कलाओं से संगत तथा विशिष्ट कलाओं से भी संबंधित मौलिक ग्रंथों को सामने लाने का कार्य किया जाता है । इस प्रभाग ने पाण्डुलिपियों का मिलान करने, उनका संपादन करने, उनका प्रामाणिक पाठ

गुरू पूर्णिमा के अवसर पर गुरू को श्रद्धांजलि देते हुए

तैयार करने और उनका अंग्रेजी में अनुवाद करने का महत्वाकांक्षी कार्यक्रम बनाया है । यह भारत के भिन्न –भिन्न क्षेत्रों में लगभग सहस्राब्दि अवधि की कलाओं की ग्रंथ परंपरा की व्याख्यान करने का प्रयास करता है । ऐसे किसी भी कार्यक्रम की संकल्पना भारत विद्या विशेषज्ञ (इंडोलाजिस्ट) अथवा कला इतिहासकारों द्वारा न तो की गई है और न ही ऐसा कार्यक्रम किया जाता है । कलामूलशास्त्र का प्रकाशन यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार भारत के भिन्ना–भिन्न भागों में विशिष्ट कलाओं पर तथा इन कलाओं के सिद्धान्त और प्रयोग से संबंधित विषयों पर खोजपूर्ण प्रबंध प्रकाशित किया जाता है । इसे ध्यान में रखकर इ.गा.रा.क.केंद्र में 74 खण्डों में 29 ग्रंथों का प्रकाशन पहले ही कर चुका है और इनमें मौलिक तथा अनुवाद पाठ को आमने–सामने मुद्रित किया गया है । इस उधमशील कार्य में भारतीय और विदेशी विद्वान लगे हुए हैं । वर्ष के दौरान निम्नलिखित 12 पुस्तकें तैयार की गईं और प्रकाशन के अंतिम चरण में लाई गईं ।

धार्मिक अनुष्ठान पर ग्रंथ

1. कणवशतपथ ब्राह्मण

   संपादन और अनुवाद डा0 सीआर स्वामीनाथन

2. बौधायन श्रौत सूत्र (भावस्वामिन भाष्य)

   संपादन– प्रो0 धर्माधिकारी

3. सचित्र वैदिक कोश

   हिंदी अनुवाद–डा0 मनोज मिश्र

आगम और शिक्षा से ग्रंथ

4. वातुलशुद्धगम संपादन और अनुवाद–प्रो0 पी एस फिलियोजैट और डा0 वसुंधरा फिलियोजैट

5. याज्ञवल्क्म शिक्षा

   संपादन और अनुवाद – डा0 एन डी शर्मा

वास्तुशास्त्र पर ग्रंथ

6. वास्तुमंडन

   संपादन और अनुवाद – डा0 अनुसूया भौमिक

7. समरांगण सूत्रधार (यह भोज पत्र पर बहुत कठिन ग्रंथ है)

   संपादन और अनुवाद– प्रो0 पी पी आप्टे और डा0 सी वी कमल

संगीत पर ग्रंथ

8. राग विबोध

   संपादन और अनुवाद – प्रो0 रंगनायकी आयंगर

9. संगीतसुधाकर

   संपादन और अनुवाद – प्रो0 आर. सत्यनारायण

10. कोहलामतम

    संपादन और अनुवाद प्रो0 आर. सत्यनारायण

11. संगीत मकरंद

    संपादन और अनुवाद – डा0 एम विजय लक्ष्मी

काव्यशास्त्र पर ग्रंथ

12. रसगंगाधर

    संपादन और अनुवाद – प्रो0 रमारंजन मुखर्जी

निम्नलिखित दो प्रकाशन की तैयारी की जा रही है:

1. श्री एम.सी. जोशी का संगृहीत अभिपत्र
2. भाण्ड पाथर पर कैटलाग

यह प्रभाग, विभिन्न संबंधित विषयों पर सेमिनार आयोजित करता आ रहा है । निम्नलिखित सेमिनार–कार्यवाहियाँ प्रकाशन के लिए तैयार की जा रही हैं:

1. पुराणों पर सेमिनार की कार्यवाही
2. आगमों पर सेमिनार की कार्यवाही
3. पूर्वोत्तर के वैदिक विरासत पर सेमिनार की कार्यवाही
4. वाक और वाचन पर सेमिनार की कार्यवाही ।

कार्यक्रम ग: कलासमालोचना श्रृंखला

(समालोचनात्मक विद्वता और शोध के प्रकाशनों की श्रृंखला)

इस श्रृंखला में कलाओं तथा सौन्दर्य शास्त्र के विभिन्न पक्षों पर समालोचनात्मक लेखों का प्रकाशन होता है । इस श्रृंखला के एक भाग के अन्तर्गत ऐसे विख्यात विद्वानों की कृतियों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिन्होंने आधारभूत संकल्पनाओं का विस्तारपूर्वक निरूपण किया है, चिरस्थायी स्रोतों की पहचान की है और नानाविध परम्पराओं के माध्यम से सम्पर्क–सेतुओं का निर्माण किया है । इन प्रकाशनों का मानदण्ड उनकी अन्योन्य सांस्कृतिक अवधारणा संबंधी रचनाओं का महत्व, बहुज्ञान शाखा विषय और भाषा अथवा अप्रकाशयता के कारण उस ज्ञान विशेष तक न पहुंच पाना है । इस श्रृंखला में कुछ चुनिंदा विद्वान लेखकों की कृतियों के पुनरीक्षित एवं विषयानुसार पुनर्व्यवस्थित संस्करण एवं अनुवाद प्रकाशित किए जाते हैं । इस कार्यक्रम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है, डॉ0 आनन्द के0 कुमारस्वामी की कृतियों का लेखक के प्रामाणिक संशोधनों के आधार पर पुनर्मुद्रण करना । अब तक श्रृंखला के इस भाग के अंतर्गत 17 खण्ड प्रकाशित किए जा चुके हैं । इसके अलावा, इस श्रृंखला में अब तक 30 अन्य रचनाएं भी प्रकाशित की चुकी हैं ।

इस वर्ष निम्नलिखित खण्ड प्रकाशित किए गए:

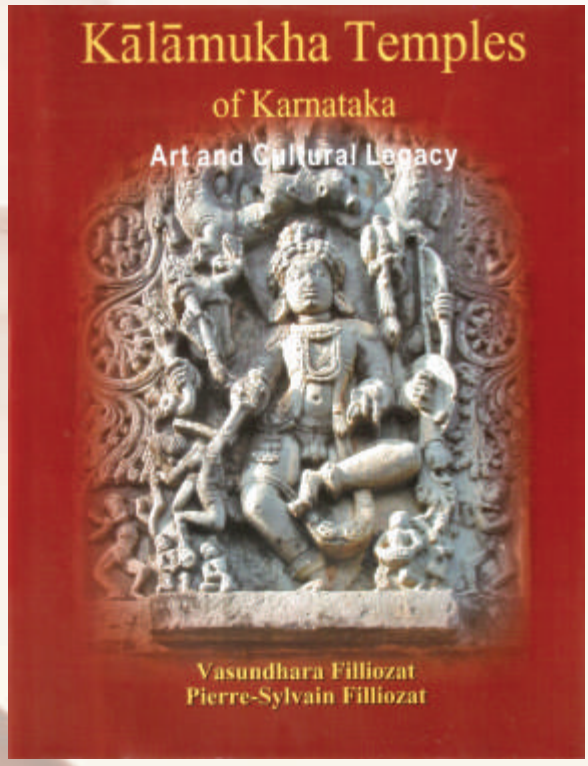

मध्यंकालीन भारतीय विरासतः भाषा वैज्ञानिक एवं साहित्यिकः 6 मार्च, 2011 को प्रो0 इन्द्रनाथ चौधुरी द्वारा सुनीति कुमार चटर्जी स्मृति व्याख्यान पर आधारित मोनोग्राफ ।

अजंताः प्रो0 डी0 स्लिंगॉफ द्वारा हैण्डबुक आफ पेंटिंग्स (मूल जर्मन का अंग्रजी अनुवाद), 3 खण्डों में प्रेस को भेजी गई ।

निम्नलिखित प्रकाशन, प्रकाशन के लिए तैयारियों के विभिन्न चरणों में हैं:

(i) एलूस्ट्रेट बालिसत्र भागवत पुराण (दो खण्डों में)

(ii) इण्डो – पुर्तगीज़ एम्ब्राइडरीः कंटेक्स्ट आर्ट हिस्ट्री

(iii) इंडियन टेम्पल आर्किटेक्टर थू द समरांगणसूत्रधार

(iv) रूप गोस्वामी की उज्जवल नीलमणि

आनन्द के. कुमारस्वामी के पाँच खण्डों को पुनः मुद्रित किया जा रहा है । वे निम्नलिखित हैः

1. टाइम एण्ड इटर्निटी
2. ह्वाट इज सिविलाइजेशन
3. सेलेक्टेड लेटर्स आफ आनन्द के. कुमारस्वामी
4. यक्षः एसेजआन द वाटर कास्मोलाजी
5. एसेज आन अर्ली इंडियन आर्किटेक्टर

v. आनन्द के कुमारस्वामी पर आयोजित सेमिनार पर आधारित मोनोग्राफ

vi. संगीत साहित्य दर्शनः ठाकुर जयदेव सिंह के संगृहीत निबंध

vii. रसदेवः स्वामी हरिदास के 'कलिमल' पर भाष्य

viii. न्यूमैस्मेटिक आर्ट आफ इंडिया खण्ड III और IV

ix एशियन ऐसथेटिक थियरीज एण्ड आर्ट फार्म्स (प्रमुख सम्मेलन का परिणाम)

x विगत दशकों में कलातत्वकोश, कलामूल शास्त्र और कला समालोचना तथा अन्य प्रकाशनों के

खण्डों पर 'प्राक्कथन' और 'प्रस्तावना' लिखे गए हैं । प्रत्येक 'प्राक्कथन/प्रस्तावना' में संस्था की संकल्पना और योजना का उल्लेख किया गया है और एक पाठ का दूसरे से अंतर्सम्बंध बताया गया है, भले ही वह भारत में अंतःक्षेत्रीय संवाद के परस्पर वार्तालाप की दृष्टि से हो । इनमें से अधिकांश प्राक्कथन/प्रस्तावनाएं डा0 (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन ने लिखी हैं किंतु कुछ अन्य ने भी लिखा है। कुछ चुनिंदा प्राक्कथन/प्रस्तावना का प्रकाशन तैयार किया जा रहा है ।

कार्यक्रम

इस वर्ष निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए–

सेमिनार

1. 29–30 नवंबर, 2013 तक अजरबैजान दूतावास के सहयोग से इस प्रभाग द्वारा 'भारत और अजरबैजान– निजामी गंजबी समारोह' पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। प्रसंगवश भारत–अजरबैजान राजनयिक और सांस्कृतिक संबंधों की 20 वीं जयंती भी महान सुखन सलारी शोराई, कवि निजामी गंजवी की 870 वीं जयंती पड़ी थी । इस विषय को दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे सांस्कृतिक और कलात्मक प्रतिबद्धताओं को उजागर करने के लिए अत्यंत उपुयक्त पाया गया। यह भारत के बारे में निजामी गंजवी की रचनाओं, कला और लेखन कार्य (अहले कलम) से जुड़े भारतीयों के प्रति आदर और प्रेम दर्शाता है। इस कार्यक्रम में सेमिनार, प्रदर्शनी, सांस्कृतिक रंगमंच और फील्ड पर्यटन आयोजित किया गया ।

2. वाक और वाचन पर राष्ट्रीय सेमिनार (4–5 मार्च, 2013, दिल्ली) इस प्रभाग द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। बंगलौर, मैसूर, पांडिचेरी, कश्मीर, पुणे और दिल्ली से विद्वानों और प्रेक्षकों ने इसमें भाग लिया। यह कार्यक्रम अपने आपमें ऐसा पहला कार्यक्रम है जिसमें दो समान किंतु भौगोलिक रूप से बौद्धिक और आध्यात्मिकता की सुदूर परंम्पराओं की अनुसंधान संभावनाओं को खोजा गया।

वाक् और वचन का सम्मेलन सत्र

अजर बैजान हाथ से बुना कालीन, भारत अजरबैजान–निज़ामी गंजबी समारोह

सुश्री सुषमा कल्ला ने सस्वर गायन किया और 'लाल वाख' गाया और अजंलि कौल ने 'ललद्येद' (एक आध्यात्मिक यात्रा) नाम से नृत्य–अभिनय प्रस्तुत किया । सुश्री नीला कोडली ने कर्नाटकी शैली में वाचन गाया और डा0 वसुंधरा द्रुरैस्वामी ने अपने दल के साथ भरतनाट्यम शैली में वाचन की प्रस्तुति की। दोनों दिन प्रस्तुतियॉ की गईं जो कि सेमिनार के विषय की पूरक थीं ।

व्याख्यान

1. 'दि पावर आफ वर्डसः अण्डरस्टैडिंग इंडियन कल्चर थ्रु इट्स की कान्सेप्ट' पर और

'डिसाइफारिंग इंडियन आर्टसः दि प्रोजेक्ट आफ फंडामेंटल टेक्स्ट कलामूलशास्त्र' – पर दो व्याख्यान 12–13 मार्च, 2013 को प्रो0 बेटिना बामर द्वारा दिए गए । इन व्याख्यानों में इ.गा.रा.क. केंद्र में कलातत्वकोश और कलामूलशास्त्र श्रृंखला में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में दो आधारभूत प्रकाशनों के अभिप्राय और महत्व पर ध्यान दिया गया ।

2. 23 नवबंर, 2012 को प्रो0 पी.एस. फिलियोजाट द्वारा 'स्माइल इन संस्कृत लिटरेचर एण्ड. इंडियन आर्ट'

3. 23 नवबंर 2012 को डा0 वसुन्धरा फिलियोजाट द्वारा 'वातुलशुद्धाख्या तंत्र एण्ड इट्स इंफ्ल्युंस आफ कन्नड लिटरेचर'

4. शास्त्र और प्रयोग कार्यक्रम – म्यूजिक एप्रिसिएशन' पर प्रो0 अम्लान दासगुप्ता और श्री इरफान जुबेरी द्वारा दो सार्वजनिक व्याख्यान और पं0 राजशेखर मंसूर तथा उत्साद मुहम्मद अहमद वारसी नसीरी कव्वाल द्वारा दो संगीत कार्यक्रम 4–5 फरवरी, 2013 को नई दिल्ली में इस कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किए गए । यह कार्यक्रम नाद सागर आर्काइव, दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया ।

विद्वत सम्मेलन

फरवरी, 2013 में वेद विज्ञान महापाठशाला, आर्ट आफ लिविंग आश्रम, बंगलोर के सहयोग से बंगलोर में क्षेत्रीय पारंपरिक विद्वानों का सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का उददेश्य दक्षिणी राज्यों से विद्वानों का पता लगाना तथा

अतिसा दीपांकर जानश्री की प्रदर्शनी का एक दृश्य

'कलामूलशास्त्र' श्रृंखला के लिए नए ग्रंथों का पता लगाना था ।

डा0 अभिराम सुब्नदरम, डा0 ए0एस0 सुन्दरमूर्ति, डा0 जी. ज्ञानानंद, डा0 आर. नन्द कुमार, डा0 जयरामन, डा0 हनुमंतराव और शिवाचार्य शिवस्वामी तथा श्री श्री रविशंकर भी इस सम्मेलन में भाग लेने वालों में शामिल थे ।

क्षेत्र अध्ययन

इ.गा.रा.क. केंद्र ने भारत और दक्षिण पूर्व एशिया पर विशेष ध्यान दिया है । इसने भारत और इस क्षेत्र में अन्य राष्ट्रों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान और आपसी प्रभाव के अध्ययन के लिए पिछले दशकों में अनेक कार्यक्रम किए हैं ।

दक्षिण पूर्व एशिया

I. पुस्तक

डा0 बच्चन कुमार द्वारा संकलित 'दि आर्ट आफ इंडोनिशिया' प्रकाशन की कापी एडिटिंग पूरी की गई । इस पुस्तक में इण्डोनेशियाई अध्ययन के लब्ध ख्याति प्राप्त विद्वानों द्वारा लिए लिखे गए 20 लेख हैं। सहयोगियों के परामर्श से अभिपत्रों का संपादन किया गया ।

II. सम्मेलन

16–18 जनवरी, 2013 को नई दिल्ली में 'अतीशा दीपंकर ज्ञानश्री एण्ड कल्चरल रेनेसॉ' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया । इस सम्मेलन में दस एशियाई और यूरोपीय देशों से जाने–माने विद्वानों ने भाग लिया । मिनोबूसन यूनिवर्सिटी, जापान के जाने–माने बौद्ध विद्वान और प्रोफेसर केई मोचिझुकी ने 'सम प्राब्लम्स इन स्टडींग आन एशिया' पर बीज भाषण दिया । इसके अलावा 10 भिन्न–भिन्न सत्रों में 32 अभिपत्र प्रस्तुत किए गए ।

III प्रदर्शनी

'अतीशा एण्ड कल्चरल रेनेसा' पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई । यह प्रदर्शनी ट्विन आर्ट गैलरी में 16–23 जनवरी 2013 को अयोजित की

गई । अतीशा दीपंकर का जीवन और योगदान को 60 फोटोग्राफिक पैनेलों में व्यापक रूप से परिलक्षित किया गया ।

IV. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

योग्यकर्त्ता स्टेट यूनिवर्सिटी (वाईएसयू) योग्यकर्त्ता, इण्डोनेशिया से तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने इ.गा.रा.क. केंद्र और वाईएसयू के बीच संभव शैक्षिक सहयोग पर विचार–विमर्श करने के लिए 8 अक्टूबर 2012 को इ.गा.रा.क. केंद्र का दौरा किया । दोनों पक्षों ने प्रकाशन, द्विपक्षीय रूप से सम्मेलनों के आयोजन और विद्वानों के आदान–प्रदान के बारे में सहयोगी आदान– प्रदान की संभावनाओं का पता लगाया ।

V. शोध पत्र तैयार किए गए

1. एसथेटिक आफ क्लासिकल सेंट्रल जवानीस लिटरेचर एण्ड इट्स सोसल वैल्यू'
2. शैविज्म इन एंसिएंट कंबोडिया एज रिवील्ड फ्राम स्डोक काक टाम इंस्क्रिप्शन'

दृश्य कला विभाग

दृश्य कला विभाग की स्थापना अक्टूबर, 2009 में की गई थी । इस परियोजना का प्रमुख उद्देश्य महान कलाकारों और ऐतिहासिक महत्व की कृतियों का प्रलेखन कार्य, संग्रह करना और प्रदर्शनी का आयोजन करना, अभिलेख हेतु दृश्य कला से सबंधित स्रोतों की पहचान करना और दृश्य कला–पेंटिंग, मूर्त्तिकला ग्राफिक्स और फोटोग्राफी आदि के क्षेत्र में कार्यशाला, संगोष्ठी और व्याख्यान का आयोजन करना है । वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :

क– 'कंपरेटिव एसथेटिक' – 21,22 और 23 नवंबर, 2012 को डा0 जी.बी. मोहन थंपी द्वारा तीन व्याख्यान की श्रृंखला । व्याख्यान के विषय थे–

(i) रिटोरिक आफ एलोगोरीः ए कपंरेटिव स्टडी आफ थ्री प्लेज ।

(ii) रिसेप्शन एसथेटिक, रीडर–रिस्पांस थियरी एण्ड दि कंसेप्ट आफ दि सहृदय

(iii) दि प्ले इम्पल्स, इन सिलर्स एसथेटिक एण्ड लीला कंसेप्ट इन इंडियन कल्चर ।

ख–श्री गिरीश शहाने ने 17 दिसंबर 2012 को 'कंटेनिंग मल्टीट्यूड्सः फोर डिकेड्स आफ रिप्रेजेंटिंग बाम्बे इन आर्ट' पर व्याख्यान दिया ।

ग– 15 जनवरी, 2013 को 'फिलासफी आफ आर्काइविंगः इंप्लीकेशन आफ इंटेलेक्चुअल प्रापर्टी टु पालिसी एडोकेसी' पर श्री लारेंस नियांग का व्याख्यान ।

घ– 11 मार्च 2013 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'एबसेंट बाडीज प्रेजेंट सेल्ब्ज' विषय पर पैनल विचार–विमर्श। इसमें सुश्री सेबा छाछी प्रो0 पारूल दबे मुखर्जी और सुश्री मितू सेन ने भाग लिया और विचार विमर्श का सभापतित्व। सुश्री गायत्री सिन्हा ने किया ।

ड –15 मार्च 2013 को 'स्टेला क्रामरिच एण्ड द अननोन इंडियाः ए स्टडी आफ हर राइटिंग्स, आर्ट कलैक्शन एण्ड डिस्प्ले इन द यू एस (1950–1993) पर ऋतुपर्ण बासु द्वारा व्याख्यान ।

च– 19 मार्च 2013 को 'आनन्द के कुमार स्वामी (1876–1947) रिविजिटिंग ए लिगैसी पर प्रो0 रतन परिमू का व्याख्यान ।

जनपद सम्पदा

जनपद सम्पदा, आर्थिक–सांस्कृतिक एवं सामाजिक –आर्थिक दृष्टियों से समुदायों की जीवन शैलियों, परम्पराओं, लोककला तथा कला–प्रथाओं सहित संस्कृति के प्रसंगाश्रित पहलुओं पर शोध तथा प्रलेखन से संबंधित कार्य करता है। मौखिक परंपराओं पर केन्द्रित इस प्रभाग का विस्तृत फलक है जो विभिन्न सांस्कृतिक समूहों तथा समुदायों के बीच अन्तोस्संबंधों पर बल देते हुए, बहुविषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन तक फैला है । इस प्रभाग के कार्यकलाप मोटे तौर पर इस प्रकार हैं: (क) मानवजाति विज्ञान संग्रह (ख) मल्टीमीडिया प्रस्तुतियॉ तथा गतिविधियॉ । (ग) जीवन शैली अध्ययन जिसमें दो कार्यक्रम हैं– (i) लोक परम्परा (ii) क्षेत्र सम्पदा ।

कार्यक्रम (क)

मानव जाति विज्ञान संग्रह

इसके मुख्य संग्रह में अनुसंधान, विश्लेषण और प्रसार हेतु बुनियादी स्रोत सामग्री के रूमें मौलिक, पुनरूत्पादन और रिप्रोग्राफी फार्मेट वाले संग्रह प्राप्त किए जाते हैं ।

दृश्म भण्डारण

इस प्रभाग में दृश्य भण्डार प्रणाली विकसित की गई है ।

अनुसंधान परियोजना

प्रो0 भक्तवत्सल रेड्डी द्वारा आंध्रप्रदेश की पत्तम कथा (नामावली वर्णन) परम्परा, दक्षिण भारतीय भाषाओं का लोककला समाज का अध्ययन और प्रलेखन शुरू किया गया है । इस परियोजना में आंध्रप्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र के पत्तम कथा परम्परा में कुल पुराण और महाभारत कथा का प्रलेखन करने पर विचार किया गया है । पत्तम कथा परंपरा का पाठ, प्रसंग और कार्य का प्रलेखन करने के लिए संबंधित क्षेत्र में विस्तृंत फील्ड कार्य किया गया ।

प्रलेखन

- संतोकबा नामावली और फुलकारी संग्रह का फोटो प्रलेखन किया गया । संतोकबा नामावली, महाभारत का शांति पर्व तक लगभग 1200 छंदों में वर्णन है। इसे इ.गा.रा.क. केंद्र ने कई वर्ष पहले प्राप्त किया था और अनेक अवसरों पर इसे प्रदर्शित किया जा चुका है ।

  इ.गा.रा.क. केंद्र ने फुलकारी संग्रह को लगभग 15 वर्ष पहले प्राप्त किया था और जनपद संपदा प्रभाग के मानव जाति विज्ञान–संग्रह का भाग है ।

- पूर्वात्तर क्षेत्र से 1093 मानवजाति विज्ञानी वस्तुओं का प्रलेखन पूरा किया गया, मैनुअल डाटाबेस तैयार है और इसका कंप्यूटरीकरण किया जा रहा है ।

कार्यशालाएं

पावकथकली: केरल की दस्तानी कठपुलियॉ:

इ.गा.रा.के. केंद्र में 14–18 जनवरी, 2013 तक नाटनकैराली, केरल के सहयोग से बच्चों और कठपुतलीकारों के लिए इंटरैक्टिव कार्यशाला आयोजित की गई । कार्यशाला की मुख्य विशेषता थी – आमने–सामने बैठकर कठपुतली बनाना, कहानी कहना और मंच प्रदर्शन करना और इसमें सरकारी और निजी स्कूलों के बच्चों, स्लम कालोनी के बच्चों तथा विशेष स्कूलों से अशक्त बच्चों ने भाग लिया । कलाकारों के बीच परस्पर सवांद और आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करने के लिए दिल्ली स्थित कठपुतलीकारों के साथ इंटरेक्टिव सत्र भी कार्यशाला के भाग के रूप में आयोजित किए गए ।

पावकथकली अभिनय, केरल की कठपुतली परम्परा

अन्तर्राष्ट्रीय–शैलकला प्रदर्शनी पर बच्चों की उपस्थिति

केरल में आयोजित कार्यशाला के दौरान प्रलेखित की गई पावकथकली का संपादन पूरा किया गया और डीवीडी जारी की गई ।

प्रदर्शनियाँ

महाराजा अग्रसेन कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 6–16 फरवरी, 2013 तक 'डि–टेरराइजिंग डाइवर्सिटीजः कल्चर, लिटरेचर एण्ड लैंग्वेज आफ इंडीजीनस (काप्रीहेंडिंग फ्ल्यूडिटी आफ कल्चरल बार्डस)' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के भाग के रूप में आख्यान नाम से मास्क, कठपुतली और

आख्यान–मास्क, कठपुतली एवं स्क्रोल प्रदर्शनी पर छाया कठपुतली

स्क्रोल (नामावली) की प्रदर्शनी आयोजित की गई । यह प्रदर्शनी इ.गा.रा.क. केंद्र में अक्तूबर – नवंबर 2010 में आयोजित बड़ी आख्यान प्रदर्शनी का छोटा रूप थी । यही प्रदर्शनी दिल्ली विश्वविद्यालय में विश्व विद्यालय के वार्षिक सांस्कृतिक अंतर्ध्वनि के अवसर पर भी 22–24 फरवरी तक लगाई गई ।

कार्यक्रम 'ख'

आदि दृश्य

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के प्रमुख शैक्षिक कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण कार्य मानव की मौलिक अवबोधन शक्तियों से उदभूत कलात्मक आविर्भावों का अन्वेषण करना है। मानव को संसार के प्रति जागरूकता का बोध आदि दृश्य (देखने की प्रारंभिक चेतना) और आदि श्रव्य (सुनने की योग्यता) के जरिए हुआ ।

शैलकला एककः

एकक द्वारा 2012 –13 के दौरान निम्नलिखित कार्य पूरे किए गएः

शैलकला पर प्रागैतिहासिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

(1) 6–13 दिसंबर, 2012 तक शैल कला पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें विदेश से आए कुछ विद्वान थे ।

(2) 6 दिसंबर, 2012 से 23 जनवरी, 2013 तक भारतीय शैला कला और विश्व परिप्रेक्ष्य में शैल कला प्रदर्शनी आयोजित की गई ।

(3) विषय विशेषज्ञ प्रो0 राबर्ट बडनरीक, प्रो0 वी0एच0 सोनवने, प्रो0 इमैनुअल अनति, डा0के0के0 चक्रवर्ती और प्रो0 लारेंस लोएनडार्फ का पांच उपमहाद्वीप के शैल कला पर 7–11 दिसंबर, 2012 तक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

प्रो. राबर्ट बडनरीक एवं डॉ. कपिला वात्स्यायन–
शैलकला सभा के एक दृश्य

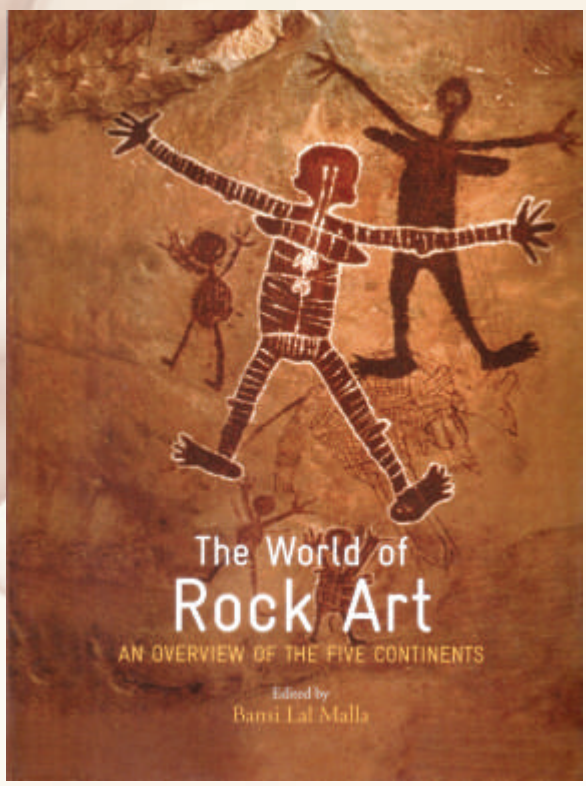

(4) स्कूली बच्चों और दर्शकों के लिए 7–12 दिसंबर, 2012 तक कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

(5) 13–14 दिसंबर, 2012 तक बूंदी शैल कला स्थल (राजस्थान) का दौरा किया गया।

प्रकाशन

शैल कला 2012 पर अंतर्राष्ट्रीय आयोजन के उदघाटन समारोह पर विषय से संबंधित निम्नलिखित पाँच प्रकाशन जारी किए गए–

(i) 'ग्लोबल राक आर्ट' संपादक–बी एल मल्ला और वी.ए; सोनवने ।

(ii) 'रार्क आर्ट आफ आंध्रप्रदेशः ए न्यू सिंथेसिस – एन चंद्रमौलि, जनरल संपादक–बी.एल मल्ला् ।

(iii) 'द वर्ल्ड आफ रॉक आर्टः एन ओवर वियू आफ फाइव कंटिनेंटस– संपादक बी.एल.मल्ला।

(iv) 'राक आर्ट' ए कैटलाग' (राक आर्ट पर प्रदर्शनी–2012) संपादक एस0 एस0 विश्वास ।

(v) 'अण्डरस्टैंडडिंग राक आर्ट इन कंटेक्स्ट' (राक आर्ट–2012) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की विवरणिका) संपादक बी.एल. मल्ला ।

'राक आर्ट स्टडीज' दो भागों में जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाहियॉ हैं, प्रकाशन की तैयारी में है ।

डी.वी.डी; जारी किया जाना

शैल कला पर अंतराष्ट्रीय आयोजन के उदघाटन के दौरान इ.गा.रा.क. केंद्र में प्रलेखन के आधार पर तीन डीवीडी जारी की गई –

(i) जम्मू एवं कश्मीर (लद्दाख की शैलकला)

(ii) झारखण्ड की शैल कला

(iii) भारत की शैल कला

(iv) आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु और राजस्थान की शैलकला पर डीवीडी बनाने का कार्य चल रहा है ।

संपर्क कार्यक्रम

यात्रा प्रदर्शनी

अंतर्राष्ट्रीय शैल कला प्रदर्शनी का एक भाग, यात्रा प्रदर्शनी में बदला गया । यह 5–28 मार्च 2013 तक भारत कला भवन, बीएचयू, वाराणसी में लगाई गई । आने वाले वर्षों में ऐसी प्रदर्शनी और अधिक क्षेत्रों में लगाई जाएगी ।

व्याख्यान

वाराणसी में प्रदर्शनी के दौरान इ.गा.रा.क. केंद्र ने निम्नलिखित व्याख्यानों की मेजबानी की – प्रो0 राधाकांत वर्मा ने 5 मार्च, 2013 को 'द रार्क आर्ट आफ नार्दर्न विंद्ययान रीजन' पर व्याख्यान दिया ।

बिदेसिया अभिनय का एक दृश्य

प्रो0 जगन्नाथ पाल ने 6 मार्च, 2013 को 'प्रिहिस्टोरिक रॉक आर्ट इन विंध्याज़ इन उत्तर प्रदेश एण्ड एडज्वाइनिंग एरियाज इन नार्थ सेंट्रल एशिया' पर व्याख्यान दिया ।

फील्ड डाटा का समेकनः मेनुअल और डिजिटल

(i) झारखड के 600 अवाप्त फोटो के छोटे विवरण जोड़े गए ।

(ii) आंध्रप्रदेश के 200 फोटोग्राफ के संक्षिप्त विवरण के साथ डिजिटल और मैनुअल अवाप्ति का कार्य पूरा किया गया ।

(iii) राजस्थान, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु में शैल कला स्थलों के 6,000 डिजिटल फोटो और फोटो प्रिंट का पृथक्करण और श्रेणीकरण पूरा किया गया ।

(iv) आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु और राजस्थान से फोटो के मैनुअल और डिजिटल अवाप्ति (एकसेसनिंग) कार्य चल रहा है । अन्य डिजिटल डाटा जैसे जीपीएस और वीडियो, समेकन की प्रक्रिया में और नक्शे तथा डीवीडी के उत्पादन की प्रकिया में है ।

कार्यक्रम (ग)

जीवन शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न समुदायों की मौखिक परम्पराओं पर विशेष बल दिया जाता है । यहाँ कलात्मक अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवन शैलियों तथा जीवन कार्यो में सन्निहित रूप से देखा जाता है । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लोक परम्परा एवं क्षेत्र – सम्पदा दो मुख्य कार्य क्षेत्र हैं ।

लोक परम्परा

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत सांस्कृतिक समुदायों की उन जीवन शैलियों पर बल दिया गया है जो उनके भौतिक एवं प्राकृतिक निवास स्थान, सामाजिक – सांस्कृतिक एवं अर्थशास्त्रीय विधियों एवं उनके सृजनात्मक तथा रचनात्मक जीवन से प्रकट होता है । इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाएं, क्षेत्रीय आधार पर किए गए अध्ययन के चारों ओर घूमती हैं । वर्ष के दौरान चलाई गई प्रमुख परियोजनाएं एवं कार्यक्रम इस प्रकार हैं:–

परियोजनाएँ

महाभारत की जीवंत परम्परा

वर्ष 2010 में प्रारम्भ महाभारत परियोजना भारत में महाकाव्य के जीवित पंरपराओं के मानचित्रण के लिए चल रही एक शोध परियोजना है । केरल, तमिलनाडु और गढवाल में शोध और प्रलेखन कार्य 2012 –13 में चलाया गया। 'जय उत्सव' 2011 का संगोष्ठी अभिपत्र प्रकाशन के अंतिम चरण में हैं ।

- डा0 श्रीकला एस. द्वारा केरल में दुर्योधन मंदिर का और डा0 साइमन जॉन द्वारा तमिलनाडु का अर्वन महोत्सव का प्रलेखन कार्य महाभारत परियोजना के भाग के रूप में पूरा किया गया ।
- डा0 सुधीर गुप्ता द्वारा 'डान्स आफ पाण्डवाज' फिल्म, उत्तराखण्ड में महासू क्षेत्र और हिमाचल प्रदेश में महाभारत की जीवित परंपरा का प्रलेखन पूरा किया गया ।
- गोंडी महाभारत (गोंडी से हिंदी) पूरा किया गया ।

रामकथा की जीवित परंपरा

मध्य प्रदेश से बुंदेली गीतों में रामकथा और राजस्थान से मेवाती रामकथा 'लंका चढ़ाई' पूरी की जा चुकी है ।

पारंपरिक ज्ञान प्रणाली धान उगाने की संस्कृति

प्रभाग ने वर्ष 2012 में 'पैडी ग्रोइंग कल्चर्स' नाम से एक विशाल शोध परियोजना का शुभारम्भ किया । इस परियोजना के अन्तर्गत शोध के प्रमुख क्षेत्र हैं इतिहास, आरम्भ एवं इससे जुड़े समुदाय, कृषि पद्धतियॉ, पारिस्थितिकी एवं स्रोत प्रबन्धन, धार्मिक कार्यकलाप, लोककथा एवं अभिनयः राजकीय नीति एवं शासन । क्षेत्रीय संस्थानों एवं विद्वानों के साथ सहयोगात्मक शोध कार्यक्रम की संभावनाओं की खोज के लिए प्रभाग ने तीन कार्यशालाओं का

आयोजन किया ।

पहली कार्यशाला (दक्षिणी क्षेत्र) 5 से 7 दिसम्बर, 2011 को पांडिचेरी विश्व विद्यालय के मानव विज्ञान विभाग के सहयोग से पांडिचेरी में आयोजित की गई ।

दूसरी कार्यशाला (पूर्वी क्षेत्र) 3 से 4 मार्च, 2012 को भुवनेश्वर में प्रो0के0के0 बासा, मानवविज्ञान विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय एवं सचिव सेंटर फॉर हेरिटेज स्टडीज भुवनेश्वर, उड़ीसा के सहयोग से आयोजित की गई ।

तीसरी कार्यशाला (पूर्वात्तर क्षेत्र) 9–10 अप्रैल, 2012 को संस्कृति एवं सृजनात्मक अध्ययन, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के सहयोग से शिलांग में आयोजित की गई । प्रभाग ने 17 अगस्त, 2012 को पूर्वोत्तर और पूर्वी क्षेत्र के लिए धान परियोजनाओं की समीक्षा बैठक भी आयोजित की । चल रही परियोजनाएं हैं:–

1. दक्षिणी क्षेत्र

धान की खेती: लोक प्रशासन विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय के सहयोग से तमिलनाडु में भू–राजस्व मूल्यांकन का निर्धारक और अंतर्देशीय जल संसाधन प्रबंधन–एक अध्ययन: इस शोध परियोजना में धान की खेती को कृषि के लिए सतत साधन बनाने हेतु पूर्व मद्रास प्रेजिडेंसी (1902–1956) में भारत सरकार द्वारा किए गए राजनीतिक और प्रशासनिक प्रबंध का अध्ययन करने का आशय है । इस अध्ययन में अंतर्देशीय जल संसाधन प्रबंधन भू–राजस्व वसूली पर भी ध्यान दिया जाना है ।

2. पश्चिमी घाटों के विशेष संदर्भ में दक्षिण भारत में सलीम अली पक्षी विज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केंद्र, कोयंबतूर के सहयोग से चावल जैव–विविधता में उतार–चढाव की पारिस्थितिकी और मानव–जाति सांस्कृतिक परीक्षा: इस शोध का उद्देश्य– पश्चिमी घाटों की पारंपरिक चावल की किस्मों को विविधता और उससे जुड़े पांरपरिक ज्ञान का पता लगाना और प्रलेखन करना है । इस परियोजना में चावल जैव विविधता, पारिस्थितकीय स्थिति, सस्य–विज्ञानी प्रथाओं, वाणिज्यिक और सामाजिक–धार्मिक महत्व के आधार पर महत्वपूर्ण चावल क्षेत्रों को देखा जाएगा।

3. लोक कला विभाग, मंच कला अध्ययन, मदुराज कामराज विश्वविद्यालय के सहयोग से संगम साहित्य में धान पुनर्निर्माण व्यावहारिक और लक्षण विज्ञान वर्णन: इस परियोजना में प्राचीन भारतीय सभ्यता में 'संगम साहित्य ग्रंथ' के जरिए 'धान' के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा ।

4. लोक भूमि (फोकलैण्ड), केरल के सहयोग से धान की वाचिक कथा का प्रलेखन, लिप्यंतरण और अनुवाद: इस परियोजना में केरल के भिन्न –भिन्न क्षेत्रों में धान संस्कृति से जुड़ी वाचिक कथाओं और गीतों का पता लगाया जाएगा और उन्हें लिप्यंतरित तथा अनूदित किया जाएगा । अनुभवजन्य डाटा, फील्ड कार्य और मानव जाति शोध प्रणाली के जरिए इकट्ठा किया जाएगा ।

5. कर्नाटक के टुलुनाड क्षेत्र में धान उगाने की संस्कृति: भारतीय चिकित्सा मानव–विज्ञान सोसायटी मैसूर के सहयोग से धान उगाने की संस्कृति: से जुड़े धार्मिक अनुष्ठानों पर विशेष ध्यान देते हुए एक मानव विज्ञान अध्ययन । इस परियोजना में धान से जुड़े सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों का पता लगाकर अध्ययन किया जाता है। इसमें धान की खेती के लिए भूमि के उपयोग में हुई कमी के कारणों और धान की खेती में लगी आबादी के घटकों पर भी ध्यान दिया जाता है ।

6. मानव–विज्ञान विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी के सहयोग से दक्षिण भारत में धान उगाने की संस्कृतियों का टीका सहित ग्रंथ–सूची: इस परियोजना में दक्षिण भारत में धान उगाने की संस्कृति से संबंधित पुस्तकों, मोनोग्राफ, लेखों, रिपोर्टो, शोध पुस्तकों और शोध–प्रबंधों के रूप मे प्रकाशित/अप्रकाशित

शोध रचनाओं की टीका सहित ग्रंथ सूची प्रकाशित किए जाने की योजना है । ग्रंथ सूची में चार दक्षिणी राज्यों – तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल और संघ राज्य–क्षेत्र पांडिचेरी का साहित्य लिया जाएगा ।

7. लोककथा संसाधन और शोध केंद्र सेंट जेबियर कालेज, पलायमकोट्टै, तमिल नाडु के सहयोग से तमिल नाडु के धान उत्पादन संस्कृति से जुड़ी पारंपरिक उत्थापन सिंचाई प्रौद्योगिकी, औजार एवं यंत्र के विशेष संदर्भ में भौतिक संस्कृति का प्रलेखनः इस परियोजना में 'कमलै' और 'यीत्रम' – जो तमिल नाडु के दक्षिणी जिलों में धान की खेती की पारंपरिक उत्थापित सिंचाई प्रणाली है, के विशेष संदर्भ में पारम्परिक सिचाई प्रणालियों का अध्ययन किया जाना है ।

8. कट्टानाडु, केरल में धान–संस्कृतिः अंतर्राष्ट्रीय संबंध और राजनीति अध्ययन, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, काट्टायम, केरल के सहयोग से लोक परंपरा, अनुष्ठान, और महोत्सवः इस परियोजना में धार्मिक अनुष्ठान, विश्वास और जीवन चक्र प्रथाओं में धान के महत्व का प्रलेखन करने का प्रयास है । इसमें चावल/धान से जुड़े अनुष्ठांनों में आध्यात्मिक और वंशानुगत संबंध और ढांचा एवं काव्य के प्रति समझ स्थापित करने का भी प्रयास है । इस अध्ययन में कट्टानाडु क्षेत्र में धान से जुड़ी शब्दावली को भी तैयार किया जाएगा ।

II. पूर्वी क्षेत्र

1. एशियाई सतत विकास संस्थान, राँची, झारखण्ड के सहयोग से झारखण्ड में मुंडा, संथाल, ओराओं और सादान के बीच धान –संस्कृतिः सांस्कृतिक मानव जाति विज्ञान आयामः इस अध्ययन में धान से जुड़े जीवन चक्र समारोहों, मेलों और उत्सवों, अनुष्ठानों मौखिक कथाओं, गीतों, कहानियों, खाना बनाने आदि जैसी सांस्कृतिक प्रथाओं का प्रलेखन करना है ।

2. एक्सआईएसएस झारखण्ड के सहयोग से मुंडा, संथाल, ओराओं और सादान की धान/चावल की पारंपरिक बुद्धिमत्ता सस्यु–विज्ञानी प्रथाएंः इस बौद्धिक परंपरा–अर्थात भूमि जल प्रबंधन, पारिस्थितकी और मौसम, पारंपरिक तकनीक, औजार और यंत्र, खेती की प्रक्रिया, उत्पादन और वितरण, बीज और बीज – वपन का ज्ञान, खाद डालना और कीट नियंत्रण आदि का प्रलेखन इस अध्ययन में किया जाना है ।

III पूर्वोत्तर क्षेत्र

1. दमदमा कालेज, असम के सहयोग से असम के बहु–सामुदायिक क्षेत्रों में धान उत्पादन परंपराः इस प्रस्तावित अध्ययन में धान उत्पादन, महोत्सव, विश्वास, धार्मिक अनुष्ठान के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का प्रलेखन करना तथा असम के हाजो क्षेत्र में हिन्दु मुसलमान और बोडो जैसे विभन्न समुदायों के बीच समानताओं और मेलखाते कारकों का अध्ययन करना है । यह अध्ययन प्राथमिक और आनुषंगिक स्रोतों के आधार पर गुणात्मक विश्लेषण होगा ।

2. मानव विज्ञान विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, मेघालय के सहयोग से चावल और अब छाः गारो पहाडियों से प्रथाएं और कहानियॉंः इस अध्ययन में मेघालय में गारों के बीच मौखिक कथाओं, कहानियों, गीतों, धार्मिक अनुष्ठानों आदि का प्रलेखन किए जाने और चावल की भूमिका और हैसियत की जाँच भी किए जाने का प्रस्ताव है ।

3. जनजातीय अध्ययन केंद्र, असम विश्वविद्यालय, दिफू कैंपस, कर्बी अंगलांग, असम के सहयोग से कर्बी के सामाजिक जीवन में चावलः इस अध्ययन का उद्देश्य चावल की खेती से जुड़ी सांस्कृतिक प्रथाओं का प्रलेखन करना तथा मौखिक गीतों, लोक नृत्यों की रिकार्डिग करना और पाठों, गीतों तथा गानों का अनुवाद एवं लिप्यंतरण करना है 1 इसमें लिंग (स्त्री–पुरूष) की भूमिका तथा भूमि/संपत्ति से इसके संबंध की खोज भी की जाएगी ।

सांस्कृतिक पहचान और कलाओं में इसका प्रगटीकरण

मल्लन्ना महाकाव्यः गोलाओं का पंथ, प्रथा और सामाजिक पहचान का अध्ययन प्रो.पी. सुब्बाचारी, द्रविड़ विश्वविद्यालय, कप्पम, आंध्रप्रदेश द्वारा किया जा रहा है । इस परियोजना में मल्लन्ना महाकाव्य को आडियो और वीडियों रूप में पूर्णतया प्रलेखित, लिप्यंतरित और अनुवादित किया जाना है और इस कार्य में धार्मिक परंपरा, जो महाकाव्य के इर्द–गिर्द चलती है तथा गोलाओं की मानवजाति विज्ञान भी शामिल है, जो मल्लन्ना के महाकाव्यत्वं और धर्म परंपरा का विश्लेषण करने के लिए महत्वपूर्ण है । मल्लन्ना, आंध्रप्रदेश के चरवाहा समुदाय का लोक देवता है । वे वार्षिक उत्सव आयोजित करते हैं जिसमें मल्लन्ना की कहानी सुनाना भी शामिल है । तेलंगाना जिलों–वारंगल, मेडक, नालगोण्डा और महबूबनगर में मल्लन्ना के संप्रदाय क्षेत्रों में फील्डकार्य किया गया है ।

परंपरा और मिली जुली संस्कृति का संगम

'ईकोज फ्राम द हार्ट' नाम की इस परियोजना में मुस्लिम महिलाओं द्वारा 1920 ओर 1950 के बीच उर्दू में लिखे लेखों का संकलन और अंग्रेजी में उसका अनुवाद किया जाना है जिसका प्रयोजन यह है कि स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान और अपने समुदाय में सुधार आंदोलनों को मंच उपलब्ध कराने के योगदान को बताया जा सके । सुश्री नूर जहीर (जो महिलाओं पर लिखती हैं) ने अंतिम पाण्डुलिपि प्रस्तुत की है जो चार खंण्डों में है ।

डॉ0 राशीद जहाँ की साहित्यिक दुनिया

यह परियोजना डॉ0 राशीद जहाँ (1905–1953) के जीवन पर है जो बहु–आयामी व्यक्तित्व की धनी हैं । वह एक डाक्टर, कम्यूनिस्ट पार्टी की समर्पित सदस्य एवं प्रगतिशील लेखक आन्दोलन की संस्थापक सदस्य थीं । उन पर आधारित यह परियोजना एक जीवनी–साहित्य है और इसमें अनुवाद के रूप में उनकी रचनाओं का संकलन है । डॉ0 रक्षंदा जलील ने फोटो के साथ अंतिम पाण्डुलिपि प्रस्तुत कर दी है । इस रचना के प्रकाशन के लिए 'वूमन्स अनलिमिटेड' के साथ करार पर हस्ताक्षर हुए हैं । इसमें यह भी प्रस्ताव किया गया है कि पुस्तक के विमोचन के समय इ.गा.रा.क. केंद्र में डॉ0 जलील द्वारा प्रदर्शनी सामग्री का संग्रह किया जाएगा ।

अकीदत के रंग

जनपद–सम्पदा प्रभाग, अकीदत के रंग हिंद इस्लामी तहजीब के रंग का प्रकाशन किए जाने की प्रक्रिया में है । इसमें उन शोध पत्रों को भी शामिल किया जाएगा जो अकीदत के रंग कार्यक्रम के अंतर्गत दो सेमिनारों और सार्वजनिक व्याख्यानों में प्रस्तुत किए गए थे । उर्दू में प्रस्तुत किए गए अभिपत्रों का लिप्यन्तरण और अनुवाद पूरा हो गया है और सम्पादन कार्य किया जा रहा है ।

केरल के मप्पिला मुसलमानों के अरबी, मलयालम और भाषा विज्ञानी सांस्कृतिक परंपराओं का प्रलेखन–

डा0 एम0एच0 इलियास द्वारा इस परियोजना में स्थानीय तौर पर खोजी गई विलुप्तप्राय भाषा– 'केरल के मप्पिला मुसलमानों के अरबी मलयालम' का मानव जाति विज्ञान प्रलेखन शुरू किया जाना है । इसमें मप्पिला समुदायों के कला रूपों और सांस्कृतिक परम्पराओं, जो इस भाषा से अत्यंत निकट से जुडी हुई है, को रिकार्ड करने पर ध्यान दिया गया है । इस परियोजना में मप्पिला समुदायों के ओप्पाना, कौलकली, नरका, कैमुटूकली, पारीकैमुटकली जैसी कला रूपों और सांस्कृतिक प्रदर्शनों का प्रलेखन किया जाना है। इसमें मप्पिलापट्टू पाडापट्टू, किस्सा पट्टू, कल्याणपट्टू अथवा विवाह गीत, मधु पट्टूकल और वट्टापट्टू का लिप्यलन्तरण,अनुवाद और टाइपिंग भी किया जाना है । दृश्य श्रव्य प्रलेखन पूरा हो गया है । मोनोग्राफ तैयार किया जा रहा है ।

केरल के इसाइयों की प्रदर्शन परम्पराः चविट्टू नाटकम और मारगमकली –

यह परियोजना चविट्टू नाटकम और मारगमकली का केरल में उनके ऐतिहासिक संदर्भ और विकास के अन्तर्गत शोध और प्रलेख के लिए शुरू की गई है । इसमें इसाई समुदाय के संदर्भ में और वृहत्तर सांस्कृतिक वातावरण के प्रति उनके योगदान के संदर्भ में प्रदर्शन और प्रथाओं की अर्थच्छायायों को

लिया जाएगा । इस परियोजना का कार्यान्वयन श्री सैमकुट्टी पट्टोमकारी द्वारा किया जा रहा है ।

बदलते शहरी दृश्य और उभरते आनुष्ठनिक क्षेत्र

भारत के विभिन्न भागों से समुदायों का शहरी क्षेत्रों में बस जाने से वे अपने साथ अपने धार्मिक अनुष्ठानों और प्रथाओं को उनके मूल रूप में और भाव रूपों में अपने साथ ले जाते हैं । यह परियोजना इस कला रूप को प्रलेखित करने का प्रयास है। इस परियोजना के अन्तर्गत इस वर्ष निम्नलिखित कार्य किए गए हैं–

1. छठ कावड़िया और दुर्गा पूजा के दृश्य श्रव्य प्रलेखन का प्रथम चरण पूरा किया गया है
2. महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में 6 से 7 फरवरी, 2013 तक दो दिवसीय अन्तार्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान प्रो0 मौली कौशल द्वारा 'डि–टेरिटोरियलाइजिंग डाइवर्सिटीजः कल्चर्स, लिटरेचर एण्ड लेंग्वेजेज आफ इंडीजीनस' पर चर्चा (टाक) की गई।
3. **बदलते शहरीदृश्य और उभरते आनुष्ठानिक क्षेत्र**

   छठ पूजा का अध्ययन पर श्री कीर्ति आजाद द्वारा 14 फरवरी, 2013 को सार्वजनिक भाषण दिया गया ।
4. **गद्दी महाकाव्य सवीन का अनुवाद और लिप्यन्तरण**

   गद्दी कथागीत का प्रलेखन– निम्नलिखित पाठों का अनुवाद किया गया हैः नाकू द्वारा एंचालीस, कृपाराम द्वारा शिवकथा, भगत रामः नाग लीला, पूरन भगत की कहानी, मोर ध्वज की कथा, नीरू भगत की कथा, गोपीचन्द की कथा ।
5. **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत पर राष्ट्रीय वस्तु सूची**

   प्रभाग में भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत पर एक राष्ट्रीय वस्तु सूची तैयार करना शुरू किया गया है जिसमें 30 फर्मों को शामिल किया गया है । वस्तुसूची बनाने का कार्य प्रो0 मौली कौशल के पर्यवेक्षण में चल रहा है । यह वस्तु सूची इ.गा.रा. क. केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध है ।

पूर्वोत्तार अध्ययन कार्यक्रम – चल रही शोध परियोजनाएं

1. **असम और मणिपुर में बह्मपुत्र और बारक घाटी के विशिष्ट संदर्भ में पूर्वोत्तर भारत की इस्लामी विरासतः–**

   प्रो0 अबू अहमद, आईआईटी गुवाहाटी के सहयोग से यह परियोजना असम और मणिपुर की तीन बड़े भौगोलिक स्थानों–बह्मपुत्र घाटी और बारकघाटी और इम्फाल घाटी, इस्लामी विरासत को प्रलेखित करने का प्रयास है । इस परियोजना में मुसलमानों की स्थानीय लोक परम्परा, जिनमें उनकी भाषाएं, वैवाहिक अनुष्ठान, जाति प्रणाली, जीवन चक्र समारोह, पहनावा और खाने की आदतें भी शामिल है, का प्रभाव मापने का प्रयास किया जाना है । मस्जिदों, मक्ताबों, मदरसों खनकाओं और मजारों जैसी विरासत भवनों का प्रलेखन करना और इन भवनों की वास्तुकला पर स्थानीय प्रभाव भी इस परियोजना के अंग हैं ।

   यह परियोजना पूरी हो चुकी है और अंतिम रिपोर्ट और फिल्म प्राप्त हो गई है । पाण्डुलिपियॉ विषय के विशेषज्ञ के पास अकादेमिक मूल्यांकन के लिए भेज दी गई है और रिपोर्ट प्राप्त हो गई है ।

2. **पूर्वोत्तर भारत में वैष्णव पुनर्जागरण का पुनर्अध्याय**

   प्रो0 अर्चना बरूआ,, आईआईटी, गुवाहाटी, इस परियोजना का कार्यान्वयन कर रही हैं जो 15वी–16वीं शताब्दी में वैष्णव पुनर्जागरण के संदर्भ में असम एवं मणिपुर के बीच सांस्कृतिक संवादों पर केन्द्रित है । पुस्तकालय परामर्श, ग्रंथ सूची, क्षेत्र कार्य तथा शोध कार्य वर्ष 2011–2012 में किया गया था । अन्तिम रिपोर्ट प्राप्ति हो गई है। पाण्डुलिपियाँ विषय के विशेषज्ञ को

अकादेमिक मूल्यांकन के लिए भेजी गई थीं और उनकी रिपोर्ट प्राप्त हो गई है ।

3. भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में वस्त्र परंपरा का प्रलेखन

नैशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद ने इस कार्य का प्रथम चरण वर्ष–2011–12 में पूरा कर लिया । इस चरण में अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, असम एवं नागालैंड में क्षेत्र कार्य एवं प्रलेखन कार्य किया गया । अन्तरिम रिपोर्ट प्रस्तुत की जा चुकी है तथा समेकित पूर्ण रिपोर्ट परियोजना के पूरा होने के पश्चात प्रस्तुत की जाएगी ।

4. पूर्वोत्तर में अनुवाद के माध्यम से बच्चों के लिए कार्यशाला एवं पुस्तक तैयार करना–

'अन्वेशा' के सहयोग से यह कार्य किया जा रहा है और इस परियोजना का उद्देश्य असमी, बोडो, गारो, खासी, मणिपुरी एवं मिजो भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से बच्चों के लिए पुस्तकें प्रकाशित करना है । यह कार्य पूर्ण हो चुका है और अंतिम रिपोर्ट प्राप्त हो गई है।

5. सौंदर्य एवं नैतिक दुनिया में स्त्रियाँः पूर्वोत्तर भारत में समुदायों का पारम्परिक एवं सांस्थानिक प्रथाओं का पता लगानाः –

2011 में शुरू किया गया यह अध्ययन संकल्पनात्मक एवं सैद्धान्तिक अर्थात सौंदर्य एवं नैतिक दो क्षेत्रों में किया जाएगा । यह इस बात का चित्रण करेगा कि पूर्वोत्तर भारत में विभिन्न परम्पराओं द्वारा दो सैद्धांतिक मुद्दों का वर्णन किस प्रकार किया गया है । प्रो0 भगत ओयनम जे एन यू द्वारा किए जा रहे इस प्रस्तावित शोध का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि मानव जातीय समुदायों में पारंपरिक विश्व–दृष्टि तथा सांस्कृतिक प्रथाओं में महिलाओं की क्या भूमिका हैं । इस परियोजना से शोध मोनोग्राफ, फिल्म और फोटो प्राप्त होंगे ।

6. मोयरंग जाति की महिला लोक गीतिनाट्य का प्रलेखन और पुनरूद्धार

मणिपुर की लोक गीति नाट्य मोयरंग जाति विलुप्त प्रायः स्थिति में हैं । प्रो0 लोकेन्द्र अरमबाम, मणिपुर के सहयोग से इ.गा.रा.क. केंद्र का उद्देश्यो इस विलुप्त प्रायः कला का पुनरूद्धार करना है । पहली कार्यशाला मोयरंग मणिपुरी में 20 दिनों के लिए आयोजित की गई और अभिनय के मनः शरीर प्रशिक्षण और कला पर ध्यान दिया गया । दूसरी कार्यशाला नाटक के निर्माण के पहलुओं का दृश्यांकन करने पर केन्द्रित था । दोनों कार्यशालाओं ने ऐसे निर्माण के लिए योगदान किया जिसे इ.गा.रा.क. केंद्र में हाल ही में सम्पन्न पूर्वोत्तर भारत के देशी रंगमंच महोत्सव में प्रस्तुत किया गया था। इस परियोजना से शोध मोनोग्राफ और दृश्य –श्रव्य प्रलेख प्राप्त होंगे और इन्हें वर्ष 2013 में पूरा किया जाएगा ।

7. बौद्ध दर्शनः पूर्वोत्तर (अरूणाचल प्रदेश और सिक्किम) का एक जीवत पंथ

बप्पा रे प्रोडक्शन, नई दिल्ली के सहयोग से वर्ष 2012 में एक फिल्म बनानी शुरू की गई थी । इस परियोजना का उद्देश्य हिमालयी क्षेत्र में विशेष कर अरूणाचल प्रदेश और सिक्किम में बौद्ध परमपरा का प्रलेखन करना है । इस

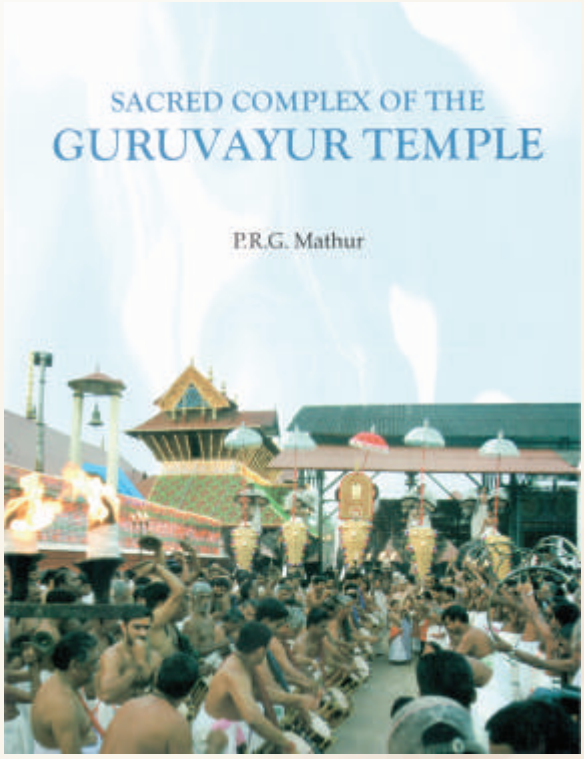

परियोजना में समुदायों के मठ परम्पराओं, सामाजिक जीवन, संस्कृति एवं विचार तथा प्राचीन थंगाओं और पाण्डुलिपियों के भण्डार तथा बौद्ध मठों के वास्तुशिल्पीय सौंदर्य को प्रदर्शित करने पर ध्यान देना है। यह परियोजना वर्ष 2013 में पूरी होगी ।

क्षेत्र सम्पदा

क्षेत्र सम्पदा में किसी विशिष्ट क्षेत्र, पूजास्थल और उसकी इकाइयाँ तथा उसके आस–पास रहने वाले लोगों की संस्कृति पर उसके प्रभाव का अध्ययन करना परिकल्पित है । इस कार्यक्रम में किसी केंद्र विशेष के भक्तिपरक, कलात्मक, भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं के पारंपरिक संबंध पर ध्यान केन्द्रित किया जाना है और इस तथ्य पर भी ध्यान दिया जाना है कि इसके नवीकरण और इसे बनाए रखने के लिए कौन से घटक कार्य करते हैं । इस कार्यक्रम के तहत समीक्षाधीन अवधि में निम्नलिखित कार्य किए गए ।

केरल क्षेत्रम्

सबरीमला अयप्पा मंदिर के पवित्र परिसर से सम्बंधित परियोजना की पीआरजी माथुर की अंतिम रिपोर्ट प्राप्त हो गई है । यह रिपोर्ट प्रकाशित किए जाने की प्रक्रिया में है ।

'केरल क्षेत्रम्' की कला का पुनः प्रकाशन डॉ0 (श्रीमती) कपिला वात्सयायन द्वारा लिए गए अध्ययन के इस क्षेत्र में बीज कार्य शुरू किया गया है ।

प्रकाशन

1. कल्चरल हेरिटेज आफ हिमालय : पीएसनेगी (प्रेस में)
2. लैंग्वेरज एण्ड कल्चरल डाइवर्सिटी प्रो0 डी0पी0 पटनायक (प्रेस में)
3. रामकथा इन नैरेटिव, परफार्मेंस एण्ड पिक्टोरियल ट्रैडिशन (प्रेस में)
4. द लिविंग ट्रैडिशन आफ महाभारत(संपादन कार्य अंतिम चरणों में) है
5. इंटर कल्चरल डायलाग बिटविन साउथ ईस्ट एशिया एण्ड नार्थ ईस्ट इंडिया (कार्य चल रहा है)
6. सैक्रेड टेम्पल आफ सबरीमला अय्यप्पा –पीआरजी माथुर (कार्य चल रहा है)

फिल्में

प्रभाग द्वारा निम्न लिखित फिल्में निर्मित की गईः–

1. कुमाऊनी रामलीला परम्परा ओपे–राम का प्रलेखन(हिंमाशु जोशी द्वारा निर्मित)
2. कौरवाज इन मालानद केरल में दुर्योधन मंदिर का प्रलेखन (श्रीकला एस)
3. अण्डार द फुल मूनः द आरवन फेस्ट (डॉ0 साईमन जॉन)
4. पांडुवान (पाण्डव) श्री सुधीर गुप्ता, उत्तराखण्ड और हिमाचल प्रदेश के महासु क्षेत्र में महाभारत की जीवित परम्परा का प्रलेखन ।
5. पावकथकलीः केरल के हथकठपुतली, इ.गा.रा. क.केंद्र का निर्माण ।

तीज उत्सवः जनपद संपदा प्रभाग का वार्षिक दिवस

जनपद–सम्पवदा प्रभाग का वार्षिक दिवस(जो तीज के अवसर पर पड़ता है) 23 जुलाई,2012 को मनाया गया। प्रभाग ने कस्बा संस्कृति पर सामूहिक गोष्ठीं का आयोजन किया गया । प्रो0 मुशीरूल हसन और

तीज उत्सव पर अभिनय करते कलाकार

प्रो0 त्रिपाठी ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और प्रो0 अखतारूल वासी ने इसकी अध्यक्षता की । गौंड पेंटिंग में रामायणी नाम से एक प्रदर्शनी और वाराणसी से आए डा0 मन्नुलाल यादव और सायरा बेगम द्वारा प्रस्तुत कजरी, ठुमरी विरहा और सावन गीत पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी इस समारोह के अंग थे ।

लोककथाः खतरे में पडी भाषा और संस्कृतियाँ

17 से 19 दिसम्बर और, 2012 तक मैसूर में केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान में भारतीय लोककथा कांग्रेस के सहयोग से इस विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया । प्रभाग के विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर अभिपत्र प्रस्तुत किए ।

सांस्कृतिक सीमाओं की अस्थिरता को समझना

महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वनविद्यालय के सहयोग से 6 से 7 फरवरी,2013 को 'डि–टेरिटोरियलाइजिंग डाइवर्सिटीज कल्चर्स, लिटरेचर्स एण्ड। लैग्वेजेज आफ द इंडीजीनस' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। प्रो0 मौली कौशल, विभागाध्यपक्ष जनपद सम्पदा प्रभाग ने 'अर्बनिज्म एण्ड। डिटेरिटोरियलाइशन ऑफ रिचुअल्स स्फेयर' पर प्रारम्भिक भाषण दिया ।

होम लैण्ड प्रदर्शनी का एक दृश्य

होम लैण्ड प्रदर्शनी

ब्रिटिश काउंसिल भारत द्वारा होमलैण्ड प्रदर्शनी के भाग के रूप में इस प्रभाग ने सुश्री सुकिता पोल कुमार, श्री डी0एन0 देवी और श्री कीर्ति आजाद की व्याख्यान माला का आयोजन किया । बिहार से 'बिदेशिया' लोक मंच के मंचन की मेजवानी की गई ताकि प्रवासी और अन्यत्र बस जाने के विषय, जैसा कि साहित्य रंगमंच और दृश्य कला में दर्शाया गया है, के इर्द गिर्द विचार चर्चा घूमती रही ।

कलादर्शन

कलादर्शन प्रदर्शनियों, प्रस्तुतियों और संवादों, जो कि संस्था के अकादेमिक संसाधनों का मर्म है, के जरिए संचार–संपर्क स्थापित करता है । कलादर्शन, कलाओं के विविध रूपों को प्रदर्शित करता है । यह कार्यक्रमों का आयोजन करता है जिनमें कला प्रदर्शनियाँ, संगीत और नृत्य् पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, सेमिनार और व्याख्यांन शामिल हैं । कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त् स्थल उपलब्ध कराना भी इस प्रभाग का कार्य है ।

प्रभाग ने वर्ष के दौरान निम्न लिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया:

प्रदर्शनी / कार्यकलाप

1. **'लॉस आफ आइडेंटिटी'** – सुश्री रत्नाबाली कान्त द्वारा दृश्य कला संस्थापन प्रदर्शन का आयोजन 4 अप्रैल,2012 को इ.गा.रा.क. केंद्र की ट्विन आर्ट गैलरी के गैलरी नं0–1 में किया गया। उनके प्रदर्शन में सुश्री स्मिता करियप्पा, श्री वासुदेव सी0 सुश्री मंगला ए0एम0 द्वारा सहायता की गई जिसमें उन्होंने अस्तित्व की जटिलताओं और विविध रूपों का पता लगाया ।

2. इ.गा.रा.क.केंद्र में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के लिए 8 से 14 मार्च 2013 तक एक सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया गया । 'भूमिका–रोल आफ वूमेन इन कल्चरल हेरिटेज' महोत्सव का उद्घाटन केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्रीमती चन्द्रेश कुमारी कटोच द्वारा किया गया । इस कार्यक्रम का आयोजन इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल के सहयोग से किया गया । समारोह के दौरान चार प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया– (क) कल्चर इन वूमेन्स लाइफ, आईजीआरएमएस द्वारा (ख) स्त्रीः आर्चीटाइप्स आल्टर बाडीज, सुश्री सजीता शंकर द्वारा (ग) कल्चरल बैरियर्स इन वूमेन्स हेल्थ (ग्लोबल हेल्थ एडोकेट्स) (घ) सेव गर्ल चाइल्ड कार्टूनिस्ट इरफान खान द्वारा इ.गा.रा.क.केंद्र की ट्विन आर्ट गैलरी में । इसके साथ पूर्वोत्तर से आई स्त्रियों ने नृत्य का प्रदर्शन किया, केरल की स्त्रियों ने सिंगारिमेलम नाम से थाप प्रदर्शन किया, कारीगर कार्यशालाएं/बासकेट्री में प्रदर्शनी, क्लेम माडलिंग, पेटिंग आदि इ.गा.रा.क. केंद्र के प्रांगण में आयोजित किए गए। व्याख्यान और सामूहिक विचार गोष्ठियों का भी आयोजन किया गया और उद्घाटन कार्यक्रम के समापन पर सी वी मेस रोड के सभागार में 'भारत की साध्वियों के गीत' पर डा0 सुभद्रा देसाई ने अपनी प्रस्तुति दी। समापन के दिन अर्थात 14 मार्च, 2013 को डा0 (श्रीमती) कपिला वात्यायन ने 'कंटीन्युटी इन इंडियन सिविलाइजेशन – रोल

8 मार्च, 2014 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आईजीएनसीए ने कुशल वरिष्ठ महिला कलाकारों को सम्मानित किया

आफ वूमेन' पर संवाद प्रस्तुत किया ।

सार्वजनिक व्याख्यान / सेमिनार / कार्यशालाएं

3. 21 अगस्त, 2012 को पायनूर में आकाशवाणी कन्नूर और संगीत विभाग, कन्नूर विश्वविद्यालय के सहयोग से, एक दिवसीय 'सेमिनार एण्ड फोक आर्ट फेस्टिवल' का आयोजन किया गया । सेमिनार में डा0 एम.वी. विष्णु नंबूदरी, डा0 के.के. करूणाकरन, डा0 ई0 श्रीधरन, डा0 पी. वसंत कुमारी प्रतिभागी थे और डा0 ए0 के0 नंबियार 'माडरेटर' थे। प्रस्तुति सत्रों में बेंगर कृष्णन पाणिकर, श्री कान्हांगद पी. दामोदरन पाणिकर जैसे अनेक कलाकार और मरातुकली पर प्रस्तुति देने वाले डा0 सी एच सुरेन्द्रन नंबियार, सुश्री पी. लक्ष्मीं और सिंगारीमेलम पर प्रस्तुति करने वाली पार्टी तथा अन्य कलाकार थे ।

4. 23 और 24 मार्च, 2013 को आईजीएनसीए के सभागार में 'इंटरैक्सन बिटवीन हिंदुस्तानी एण्ड कर्नाटिक म्यूजिक सिस्टम' पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन डा0 कर्णसिंह, अध्यक्ष आईसीसीआर और राज्यसभा के सांसद ने किया । हिंदुस्तानी विधा से संगीत धुरंधर जिन्होंने इसमें भाग लिया, डा0 प्रभा अत्रे, पं0 नयन घोष, पं0 सुरेश तलवलकर थे और कर्नाटकी विधा की प्रस्तुति श्री मदुरै जीएस मणि, डा0 एम नर्मदा और डा0 टी.वी. गोपालकृष्णन ने की । सत्रों का सभापतित्व श्री अरविंद पारीख (अध्यक्ष, आईएफएफए) और श्री गणेश कुमार (महाराष्ट्र के जाने–माने अंभग गायक) ने किया। 23 मार्च, 2013 की शाम को 'अभंग और भजन' पर वाद्य समेवत की प्रस्तुति श्री गणेश कुमार और उनके दल ने की ।

उत्तर–दक्षिण हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के बीच संवाद के अवसर पर कलाकार

संगीत समारोह

5. आईजीएनसीए के सी.वी. मेस रोड स्थित सभागार में 27 और 28 जुलाई 2012 को उस्ताद फहीमुद्दीन खान डागर की यादगार में स्मृति कार्यक्रम का दो दिवसीय आयोजन किया गया । 'ग्रेट मास्टर्स श्रृंखला पर डीवीडीः पहले दिन उस्ताद फहीमुद्दीन खान डागर पर दिखाई गई । सुबह और शाम के सत्रों में संगीत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अनेक कलाकारों जैसे–अर्णव चटर्जी (ध्रुवपद) श्रीमती रश्मि चक्रवर्ती (वायलिन) उस्ताद मोहिउद्दीन डागर (रूद्र वीणा) विदुषी मालती जिलानी (ख्याल) उस्ताद जिया फरीदुद्दीन डागर (ध्रुवपद) और अन्य अनेक कलाकारों ने प्रस्तुतियाँ दी । उस्ताद रहीम फहीमुद्दीन खान डागर की रिकार्डिंग पर श्रवण सत्र का भी आयोजन किया गया जिसका प्रबंध श्री इरफान जुबेरी ने दूसरे दिन किया ।

6. आईजीएनसीए के सी वी मेस सभागार में 30 सितंबर 2012 को 'गुरूगुहा म्युजिक फेस्टिवल' पर एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महोत्सव की मुख्य विशेषताएं थीः 'इंफ्ल्यूएन्स आफ ध्रुवपद इन मुत्तुस्वामी दीक्षितरर्स कंपोजीशन' पर प्रो0 टी आर सुब्रमणियम का व्याख्यान, (2) श्री नियवेली आर संतगोपालन का संगीत समवेत और साथ दिया – श्री पी.पी. अजय नंबूदरी (वोकल) श्री एम.ए. सुंदरेश्वरन (वायलिन) श्री के.वी. प्रसाद (मृदंगम) श्री वाइकोम आर गोपाल कृष्णन (घटम) ने ।

एक संगीत कार्यक्रम–उस्ताद रहीम फहीमुद्दीन खान डागर को समर्पित

7. 30 जनवरी,2013 को आईजीएनसीए के सी वी मेस रोड सभागार में आकाशवाणी और आईजीएनसीए के सहयोग से संगीत समारोह 'वाद्यवृंद' का आयोजन किया गया । यह कार्यक्रम पं0 रविशंकर के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रयास था ।

'वाद्यवृंद' पं. रविशंकर के प्रति श्रद्धांजलि

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी

(i) 7–9 नवंबर 2012 को योग्यकर्त्ता स्टेट यूनिवर्सिटी में 22वें अंतर्राष्ट्रीय साहित्य (i) 7–9 नवंबर, 2012 को योग्यकर्त्ता स्टेट यूनिवर्सिटी में 22वें अंतर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन में भाग लेने के लिए साउथ ईस्ट एशियन स्टरडीज के प्रभारी ने योग्यकर्त्ता, इण्डोनेशिया का दौरा किया । 'एस्थेटिक आफ क्लासिकल सेन्ट्रल जवानीज लिटरेचरः इट्स सोसल वैल्यूज' शीर्षक पर एक अभिपत्र 'शास्त्र , कल्तूर दान सुबकल्तूर' सत्र में प्रस्तुत किया गया ।

(ii) भारत एशियाई अध्ययन, बी पी एस महिला विश्व विद्यालय, खानपुर कलों, सोनीपत, हरियाणा द्वारा 18–20 जनवरी, 2013 को आयोजित इण्टरनेशनल कांफ्रेस आन साउथ ईस्ट एशिया एण्ड इंडियाः हिस्टोरिकल इंटरकनेक्शन इन आर्ट, आर्किटेक्चर एण्ड कल्चर आफ लाओस, थाईलैण्ड, कंबोडिया एण्ड वियतनाम' में साउथ ईस्ट एशियन स्टडीज के प्रभारी ने भाग लिया । सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया अभिपत्र 'शैविज्म इन एंसिएंट कंबोडिया एज रिवील्ड फ्राम स्डोक काक टाम इंस्क्रिप्शन' था ।

ट्रांस जेण्डर्स फॉकलोर (डॉ0 एस साईमन जॉन) रिलिजियस इण्टर्रेक्शन इन मणिपुरः ए स्टडी ऑफ मैतेयी मिथ्स एण्ड लिजेन्डस (सुश्री जयन्ती थाकचोम) – लिजेण्ड ऑफ न्यूमौली कुँवरी एण्ड इट्स एसोसिएशन विद फोर्ट ऑफ न्यूमौलीगढ, असम (श्री प्रणब ट्रांस जेण्डर्स फॉकलोर (डॉ0 एस साईमन जॉन) रिलिजियस इण्टर्रेक्शन इन ज्योति शर्मा) सिनेमाज फोकलोर इमेजिनेशनः माइथोलाजिकल एण्ड डिवोशनल इन अरली इण्डियन सिनेमा (सुश्री सायरा रहमान नियाजी) इमोइनूः द गाडस ऑफ प्रोसप्रेरिटी ऑफ द मैतेयी (श्री होमेन ए.सिंह) और सबिन एलनः रिफ्लेक्शन ऑफ रामायण अमंग द करवी ट्राइव ऑफ असम (डॉ0 संगीता दत्ता) प्रभाग के विद्वानों ने मणिपुर में धार्मिक वार्तालाप के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक स्रोत के रूप में विजय पांचाली पर अभिपत्र 'रिइमैजिनिंग मेडिवल लैण्डस्केप प्रस्तुत किए (सुश्री जयंती थोकचाम) असम की बह्मपुत्र घाटी का विषयगत अध्ययन (श्री प्रणब ज्योति शर्मा), पूर्वोत्तर भारत का ताइवा कला की सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति और परिरक्षण (डा0 संगीता दत्ता) ओर कम्यूनिकेशन आफ एपिरेन्सः ड्रेस एज आइडेंटिटी (सुश्री पूरियांगथानलियू)

क्षेत्रीय केंद्र – पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, वाराणसी

यह क्षेत्रीय केंद्र कलाकोश प्रभाग के कलातत्वकोश श्रृंखला पर कार्य करने के लिए स्थापित किया गया था । इस केंद्र ने नाट्यशास्त्र के ग्रंथों को संकलित करने के लिए मौलिक कार्य किया है ।

इस क्षेत्रीय केंद्र का प्रमुख कार्य कलाकोश परियोजना के अंतर्गत चल रही विभिन्न परियोजनाओं के लिए संदर्भ कार्ड तैयार करना है । इस वर्ष विभिन्न ग्रंथों से चुने गए 2869 टंकित कार्ड (कलातत्वकोश खण्ड VII पर 252 कार्ड, कलातत्वकोश खंड VIII पर 214 कार्ड, कलातत्वकोश खण्ड IX पर 160 कार्ड और अन्य शब्दावलियों पर 2232 कार्ड) तैयार किए गए। इस समय आईजीएनसीए वाराणसी में 65456 कार्ड हैं । इस वर्ष निम्निलिखित कार्य किए गए–

संपादन

1. कलातत्वकोश खण्ड VII

शोध छात्रों ने कलातत्वकोश खण्डों के लिए प्राप्त लेखों का संपादन कार्य जारी रखा । समादेशित 17 लेखों में से 7 लेख प्राप्त हुए । दो कार्यशालाएं इस वर्ष 31 मई और 30 नवंबर 2012 को आयोजित की गई । कलातत्व कोश का खण्ड VII विद्वता सत्यापन के लिए तैयार किया गया । इसमें लाइन ड्राइंग और इलूस्ट्रेशन तैयार करना शामिल है । यह खण्ड पूरा होने वाला है ।

2. नाट्यशास्त्र की पाण्डुलिपि

नाट्यशास्त्र की पाण्डुलिपि का मिलान–कार्य चल रहा है, इसका 13 अध्यायों वाला प्रथम भाग पूरा होने वाला है और शीघ्र ही प्रस्तुत किए जाने की उम्मीद है ।

3. व्याख्यानों का मोनोग्राफ

(क) 'मीनिंग एण्ड् ब्यूटी, शास्त्रिक फाउण्डेशन आफ इंडियन ऐस्थेटिक' विषयक विशेष व्याख्यान माला के अभिपत्रों का मोनोग्राफ प्रो0 के.डी. त्रिपाठी के संपादकत्व में पूरा होने वाला है ।

(ख) लोककथा 'लोकाख्यान:2012 के गायन पर मोनोग्राफ डा0 संजय कुमार के संपादकत्व में तैयार किया जा रहा है। प्रो0 के.डी. त्रिपाठी इसके जनरल संपादक होंगे ।

(ग) 'प्रोसीडिंग आफ नैशनल सेमिनार आन इंडियन एण्ड वेस्टर्न फिलोसफी आफ लैंग्वेज' (फरवरी 2010 में आयोजित) को प्रो0 पी.के. मुखोपाध्याय ने आधा कार्य पूरा करने के लिए सहमति दी है और शेष भाग प्रो0 के. डी. त्रिपाठी, जो इस खण्ड के सह–संपादक हैं, द्वारा पूरा किया जाना है ।

(घ) इसके अलावा प्रो0 एम.सी. ब्रिस्की की शिष्टाचार यात्रा के दौरान उनके द्वारा दिए गए व्याख्यान के लिप्यंकन का कार्य चल रहा है ।

सेमिनार / व्याख्यान / कार्यशालाएं

1) 3 जुलाई, 2012 को ईआरसी, वाराणसी ने कलाकोश का 24 वॉ स्थापना दिवस मनाया जिसमें प्रो0 विश्वनाथ भट्टाचार्य द्वारा 'स्प्लेंडिस इमेजिनेशन आफ कालिदास विथ स्पेशल रिफरेन्स टु मेघदूत' पर विशेष व्याख्यान दिया गया ।

2) अंर्तसांस्कृतिक अध्ययन केंद्र, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के सहयोग से 17–19 अक्टूबर 2012 को 'दक्षिण बिहार, पश्चिमी छत्तीसगढ तथा वाराणसी के आस–पास के कुछ अन्य क्षेत्रों' की लोक गाथा और रंगमंच पर तीन दिवसीय सेमिनार (लोकाख्यान 2012) आयोजित किया गया ।

3) 7–9 नवंबर 2012 तक ज्ञान प्रवाह, वाराणसी के सहयोग से ईआरसी, वाराणसी ने 'पूर्वरंग: प्रिलिमनिरीज टु इंडियन थियेटर' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की मेजबानी की । यह उच्च अकादेमिक महत्व का कार्यक्रम था जिसमें नाट्यशास्त्र के अनुसार 'पूर्वरंग' पर प्रस्तुति को ख्याति प्राप्त कलाकार और निर्देशक प्रो.सी.वी. चंद्रशेखर के निर्देशन मे पुनर्निर्मित किया गया । कार्यक्रम का संपूर्ण दृश्य श्रव्य प्रलेखन मीडिया सेंटर को संपादन के लिए भेज दिया गया ।

4) ईआरसी ने आईजीएनसीए के रजत जयंती समारोह के भाग के रूप में 'डिफरेंट डाइमेंशन आफ इंडियन फिलोसफी एण्ड आर्ट' पर विशेष

व्याख्यान माला शुरू किया। पोलैण्ड के पूर्व राजदूत प्रो0 एम.सी. ब्रिस्की ने 5 जनवरी, 2013 को 'अभिनय' पर उद्घाटन भाषण दिया ।

5) यू.एस. से प्रो0 गौतम वी बज्राचार्य ने 18 जनवरी, 2013 को 'द कनोटेशन आफ मिथुन इन द कंटेक्स्ट आफ बुद्धिस्ट आर्ट' पर एक चर्चा की ।

6) भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में 5–6 मार्च 2013 तक दो दिवसीय सेमिनार और मार्च 2013 में 'रॉक आर्ट' पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । प्रदर्शनी का उद्घाटन 5 मार्च 2013 को किया गया और यह 28 मार्च 2013 तक चलती रही ।

30 जनवरी, 2013 को आईजीएनसीए के सी वी मेस रोड सभागार में आकाशवाणी और आईजीएनसीए के सहयोग से संगीत समारोह 'वाद्यवृंद' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम पं0 रविशंकर के प्रति श्रदांजलि अर्पित करने का प्रयास था ।

7) उत्तर और मध्य भारत से 'लोकाख्यान' प्रस्तुति का प्रलेखन ईआरसी वाराणसी के लिए किया गया ।

8) ज्ञान प्रवाह, वाराणसी के सहयोग से ईआरसी वाराणंसी द्वारा वाराणसी में आयोजित 'पूर्वरंग' का प्रलेखन किया गया ।

9) 21–22 मार्च 2013 को वाराणसी में ईआरसी वाराणसी द्वारा 'रंगोत्सव का प्रलेखन किया गया ।

दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरू

इ.गा.रा.क.केंद्र के दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र(एसआरसी) ने दक्षिणी क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से संबंधित अनेक परियोजनाओं को शुरू किया है । इसने तेजी से विलुप्त हो रहे कलारूपों के अनेक महत्वपूर्ण दृश्य –श्रव्य प्रलेखन तैयार किया है। इस वर्ष निम्नलिखित कार्यकलाप रहेः–

सेमिनारः

भक्ति –ए डिस्कोर्स' पर सेमिनार

वी वी एस कालेज फार वूमेन में 2 मार्च 2013 को कर्नाटक साहित्य अकादेमी के सहयोग से एसआरसी द्वारा भक्ति पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया । प्रो0 एस. सत्तार, निदेशक (अवैतनिक) आईजीएनसीए, एसआरसी ने सेमिनार का उद्घाटन किया। प्रोफेसर कृष्णमूर्ति हनूर, जीबी. हरीश, ओ.एल नागभूषण स्वामी, पी. चंद्रिका, के.जी; नागराजप्पा ने भक्ति के विभिन्न पक्षों पर अभिपत्र प्रस्तुत किए और धर्म, दिन प्रतिदिन के जीवन में भक्ति की भूमिका तथा आध्यात्मिकता और धार्मिक अनुष्ठानों पर इसके महत्व के बारे में बताया ।

आनंद केंतिस कुमारस्वामी पर व्याख्यान

एसआरसी ने 28 मार्च 2013 को कुवेम्पू सभागार, कन्नड साहित्य परिषद, बंगलोर में आनंद केंतिस कुमारस्वामी पर व्याख्यान का आयोजन किया। श्री लक्ष्मीश तोलपदी ने कुमारस्वामी की रचनाओं और दृष्टि पर बात की। प्रो0 एस0 सत्तार निदेशक (अवैतनिक) आईजीएनसीए, एसआरसी ने व्याख्यान की अध्यक्षता की। विभिन्न संस्थाओं, कालेजों के विद्वानों और छात्रों ने समारोह में भाग लिया ।

यक्षगण मंचन

कुछ अन्य लोक कलाओं की भाँति 'यक्षगण' पुरूष प्रधान रंगमंचीय रूप है । स्त्रियों ने इस रंगभूमि में अभी हाल ही में प्रवेश किया है । ऐसा ही एक समूह 'यक्षसिरी' है जिसने 17 फरवरी 2013 को हाव्यक महासभा, बंगलोर में महाभारत के उपकथानक 'मंगधवध' का मंचन किया ।

दूसरा 'यक्षगण' मंचन–'गिरिजा कल्याण' की मेजबानी एसआरसी द्वारा वी.वी. एस कालेज फार वूमेन, भाषवेश्वर नगर के सहयोग से की गई । 'यक्षसिरी' (आर) ने 2 मार्च 2013 को 'यक्षगण' पर अन्य मंचन गिरिजा कल्याण' का आयोजन किया ।

सुग्गी कुनीत (वसंतोत्सव)

सुग्गी कुनीत एक नृत्य उत्सव है । यह हलाकी गौडों द्वारा किया जाता है जो कि कर्नाटक का एक जनजातीय समुदाय है । यह नृत्य सप्ताह भर तक चलता है और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाया जाता है और होली उत्सव पर अर्थात् पूर्णमासी के

दिन समाप्त होता है । इस समूह में सामान्यतः 35 से 40 पुरूष होते हैं। नृत्य के लिए उपयोग में लाई गई मुख्य ढोलक को 'गुम्मटे' सुग्गी कुनीत कहा जाता है । यह कार्यक्रम दो वर्ष में एक बार होता है । नर्तक रंगीन परिधान धारण करता है और सिर पर नरम लकडी से बना टोप पहनता है जिस पर चिड़ियों और फूलों की नक्काशी की गई होती है और वह एक छडी या मोरपंख नृत्य करते समय लेकर चलता है । नृत्य दल में एक मसखरा व्यक्ति भी होता है जिसे 'सुगीनवारू' अथवा 'हास्यगरारू' कहा जाता है जो दर्शकों का मंनोरंजन करता है । 'गुम्मटे' बजाते हुए नाचते गाते इस सुग्गी' यात्रा का स्वागत प्रत्येक परिवार आरती उतारकर करता है । इस यात्रा के बारे में यह विश्वास है कि इससे गॉव में रोगों का नाश होगा, वर्षा होगी और लोगों की कामनाएं पूरी होंगी । यह एक मांगलिक कार्य है और इसके बाद देव 'केंदादा मस्तियम्भा' और देवता 'कारि मस्तियप्पा' को भेंट चढाया जाता है ।

एसआरसी ने इस नृत्य का आयोजन 24 मार्च 2013 को 'अनेका'–नारायण जोशी चेरिटेबल ट्रस्ट (आर) तथा नेलागुली गोशाला गुडाबल्ली , धारेश्वर – कुमटा (एन.के;) के सहयोग से किया गया ।

पूर्वोत्तर केंद्र, गुवाहाटी

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी का गठन, आईजीएनसीए की इस क्षेत्र से संबंधित परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए चार वर्ष पहले किया गया था । यह केंद्र मानव विज्ञान विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय की ओर से अवैतनिक समन्वयकर्त्ता प्रोफेसर ए.सी.भागवती के अंतर्गत कार्य करता है ।

इस क्षेत्रीय केंद्र के अधिकांश कार्यक्रम जनपद संपदा प्रभाग से मिलान करके किए जाते हैं ।

सूत्रधार

सूत्रधार सभी प्रभागों के लिए अनके कार्यक्रमों को प्रशासनिक और वित्तीय सहायता प्रदान करने लिए जिम्मेदार है । प्रभागों से प्राप्त परियोजना प्रस्तावों की जाँच इस एकक द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए की जाती है कि वे परियोजनाएँ निर्धारित दिशा–निर्देश के अनुरूप हों । यह प्रभाग संस्कृति मंत्रालय के वित्तीय अनुदानों और निर्देशों के कार्यान्वयन के संबंध में मंत्रालय के साथ समन्वय कार्य भी करता है ।

प्रभाग ने आईजीएनसीए के कर्मचारियों के लिए कैडर समीक्षा भी की और पदोन्नति के अवसर सृजित किया। विभिन्न प्रभागों की चल रही परियोजनाओं की समीक्षा किए जाने एवं परियोजनाओं की मॉनिटरिंग के लिए शैक्षिक स्टाफ के साथ समन्वय स्थापित करने के लिए एक नए परियोजना प्रबंधन कक्ष (पीएमसी) का गठन किया गया है । प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल एवं सुचारू बनाने के लिए मानक कार्य प्रणाली शुरू की गई है ।

आईजीएनसीए में राजभाषा के प्रयोग में वृद्धि किए जाने के लिए नई शुरूआत की गई है जैसे वेबसाइट को अद्यतन करना और राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन करना । अधिकारियों, कर्मचारियों को अपने काम में बेहतरी लाने के लिए व्यावसायिक ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने एवं उनमें वृद्धि करने हेतु अधिकारियों, कर्मचारियों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यशालाओं/सेमिनार आदि में भेजने के लिए दिशा–निर्देश बनाए गए हैं ।

हिन्दी पखवाड़ा सत्र के दौरान

अनुबन्ध–1

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

न्यासी मण्डल (31.03.2012 की स्थिति के अनुसार)

1. श्री चिन्मय आर० घारे खान
   अध्यक्ष, इ०गा०रा०क०केन्द्र,न्यास
   सी–362, डिफेंस कॉलोनी,
   नई दिल्ली–110 024

2. डॉ० (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन
   85, एस०एफ०एस०,
   डी०डी०ए० फ्लैट्स
   गुलमोहर एन्क्लेव,
   नई दिल्ली–110 049

3. श्री सलमान हैदर
   ए–3, प्रथम तल,
   ईस्ट निजामुद्दीन,
   नई दिल्ली–110 003

4. डॉ० रोदम नरसिम्हा
   अध्यक्ष, इंजिनियरिंग मैकेनिक्स युनिट
   जवाहरलाल नेहरु उन्नत वैज्ञानिक
   अनुसंधान केन्द्र जाक्कुर पी०ओ०,
   बैंगलूरु 560 646

5. प्रो० ए० रामचन्द्रन
   22, भारती कालोनी विकास मार्ग,
   दिल्ली 110 092

6. श्री अनिल बैजल
   ई–524, ग्रेटर कैलास
   नई दिल्ली–110 048

7. प्रो० यू०आर अनन्तमूर्ति
   नं० 498, सुरागी, एच०आई०जी० हाउस
   आर०एम०वी० 2–स्टेज–6 ए मेन,
   बेंगलूरू 560 094

8. डॉ० पद्मा सुब्रह्मण्यम
   अध्यक्ष, नृत्योदया एवं द प्रबन्ध न्यासी
   भरतमुनि फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर
   ओल्ड 6, फोर्थ मेन रोड
   गाँधी नगर, चेन्नई–600 020

9. डॉ०स्वाती ए पीरामल
   निदेशक
   पीरामल हेल्थ लिमिटेड
   पीरामल टावर, जी०के० मार्ग
   लोअर पटेल, मुम्बई–400 013

10. सचिव, भारत सरकार
    पदेन
    संस्कृति मंत्रालय, शास्त्री भवन
    नई दिल्ली 110 015

11. सदस्य सचिव
    पदेन
    इ०गा०रा०क०केन्द्र
    सी०वी०मैस, जनपथ,
    नई दिल्ली 110 001

अनुबन्ध–2

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची
(31.03.2012 की स्थिति के अनुसार)

1. श्री चिन्मय आर० घारे खान — अध्यक्ष,
   इ०गा०रा०क०केन्द्र, न्यास
   सी–362, डिफेंस कॉलोनी,
   नई दिल्ली–110 024

2. श्री सलमान हैदर
   ए–3, प्रथम तल,
   ईस्ट निजामुद्दीन,
   नई दिल्ली–110 003

3. श्री अनिल बैजल
   ई–524, ग्रेटर कैलास
   नई दिल्ली–110 048

4. प्रो० ए० रामचन्द्रन्
   22, भारती कालोनी
   विकास मार्ग,
   नई दिल्ली 110 092

5. सदस्य सचिव,
   इ०गा०रा०क०केन्द्र
   सी०वी०मैस, जनपथ,
   नई दिल्ली 110001

अनुबन्ध –3

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में

1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च, 2013 तक आयोजित प्रदर्शनियाँ

1. 4 अप्रैल, 2012 को एक मल्टीमीडिया इनस्टालेशन लॉस ऑफ आइडेंटिटी सुश्री रत्नाबाली कान्त, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से आयोजित की गई ।

2. 6 दिसम्बर, 2012 से 23 जनवरी, 2013 को भारतीय शैलकला एवं वैश्विक संदर्भ में शैल कला की प्रदर्शनी लगाई गई ।

3. 16 से 23 जनवरी, 2013 को अतीशा एवं साँस्कृतिक पुनर्जागरण पर एक प्रदर्शनी ट्विन आर्ट गैलरी में आयोजित की गई ।

4. 6 से 16 फरवरी, 2013 को मास्क, कठपुतली एवं स्क्रॉल की आख्यान प्रदर्शनी –प्रादेशिक विविधता पर अन्तर्राष्ट्रीय सभा : संस्कृति साहित्य एवं स्वदेशी भाषा पर महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित की गई ।

5. अन्तर्राष्ट्रीय शैल कला प्रदर्शनी के एक भाग को यात्रा प्रदर्शनी में परिवर्तित कर दिया गया । इसे 5 से 28 मार्च, 2013 को भारत कला भवन, बीएचयू, वाराणसी में रखा गया ।

6. महिला दिवस उत्सव में चार प्रदर्शनियों का उद्घाटन किया गया –

   क) आईजीआरएमएस द्वारा महिलाओं के जीवन में संस्कृति

   ख) साजिद शंकर द्वारा स्त्री / आर्चिटाइप्स, अल्टरबॉडी

   ग) महिलाओं के स्वास्थ्य में साँस्कृतिक बाधाएँ (विश्व स्वास्थ्य अधिवक्ता)

   घ) 8 से 14 मार्च, 2013 को इ०गा०रा०क०केन्द्र के टिवन आर्ट गैलरी श्री इरफान खान, कार्टूनिस्ट द्वारा सेव गर्ल चाइल्ड ।

7. 8 से 28 मार्च, 2013 को महिला दिवस उत्सव के रूप में समकालीन कलाकार साजिद शंकर द्वारा पेंटिंग्स, ड्राईंग एवं इंस्टालेशन की प्रदर्शनी स्त्री : आर्चिटाइप्स अल्टरबॉडी का आयोजन किया गया।

8. 11 से 16 मार्च, 2013 राजादीन दयाल : इ०गा०रा०क०केन्द के अभिलेखागार स्टूडियों शीर्षक से राज्य कला गैलरी, गुवाहाटी में आयोजित किया गया ।

अनुबन्ध–4

1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च, 2013 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित व्यख्यानों/सेमिनार/कार्यशालाओं की सूची

क्र.सं.	शीर्षक	वक्ता	दिनांक
1.	स्प्लेंडिड इमेजिनेशन ऑफ कलिदास	प्रो० विश्वनाथ भट्टाचार्य	3 जुलाई, 2012
2.	कंपैरिटिव एस्थेटिक्स	प्रो० जी०बी० मोहन थाम्पी	21 से 23 नवम्बर, 2012
3.	स्माइल इन संस्कृत लिटरेचर एण्ड इण्डियन आर्ट	प्रो० पी०एस० फिलोजैट	23 नवम्बर, 2012
4.	वातुलसुधाख्यान तंत्र एण्ड इट्स इंफ्लुएंस ऑन कन्नड़ लिटरेचर	डॉ० वंसुधरा फिलोजैट	23 नवम्बर, 2012
5.	कंटेनिंग मल्टीट्यूडस फोर डिकेट्स ऑफ रिप्रेजेंटिंग बोम्बे	श्री गिरीश साहने	17 दिसम्बर, 2012
6.	डिफरेन्ट डायमेनशन्स ऑफ इंडियन फिलोस्फी एण्ड आर्ट अभिनय	प्रो० एम० सी० ब्रायक्शी	5 जनवरी, 2013
7.	फिलोस्फी ऑफ आरकाइविंग : इम्पलीकेशन्स ऑफ इंटेल्कचुअल प्रोपर्टी टू पोलिसी एडवोकेसी	श्री लॉरेंस लियांग	15 जनवरी, 2013
8.	द कोन्नोटेशन ऑफ मिथुन इन द कंटेंक्स्ट ऑफ बुद्धिस्ट आर्ट	प्रो० गौतम वी० बजराकारया	18 जनवरी, 2013
9.	शास्त्र एण्ड प्रयोग प्रोग्राम ऑन म्युजिक एपरिसिएशन	प्रो० एमलन गुप्ता एवं श्री इरफान जुबेरी	4 से 5 जनवरी, 2013
10.	एक्जाइल एण्ड क्रिएटिव राईटिंग	सुश्री सुक्रीता पॉल कुमार	4 फरवरी, 2013
11.	होम इन द 21 सेनचुरी	डॉ० शाशि थारुर के साथ बातचीत में अहदाफ सोएफ	6 फरवरी, 2013
12.	द रॉक आर्ट ऑफ नार्दन विंध्यान रीजन	प्रो० आर० के वर्मा	5 मार्च, 2013
13.	प्रिहिस्टोरिक रॉक आर्ट इन विध्यान इन उत्तर प्रदेश एण्ड एडजॉयनिंग नार्थ–सेण्ट्रल इंडिया	प्रो० जगनाथ पॉल	6 मार्च, 2013
14.	पावर ऑफ वडर्स	प्रो० बेटिना वॉऊमर	12–13 मार्च, 2013
15.	कांटिन्युटी इन इंडिया सिविलाईजेशन –रोल ऑफ वूमन	डॉ० कपिला वात्स्यायन	14 मार्च, 2013
16.	स्टेला करामरिस्च एण्ड द अननॉन इंडिया	डॉ० रितुपर्णा बसु	15 मार्च, 2013
17.	आनन्द के० कुमारस्वामी–रिविजिटिंग लिगेसी	प्रो० रतन परिमू	19 मार्च, 2013

1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च, 2013 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित संगीत समारोह

क्र.सं.	शीर्षक	कलाकार	दिनांक
1.	उस्ताद रहीम फहीमुद्दीन डागर पर स्मारक कार्यक्रम	–	27–28 जुलाई, 2012
2.	गुरु गुहा संगीत महोत्सव	प्रो० टी० आर० सुब्रह्मणियम एवं श्री नेवेली आर० संतनगोपलन	30 सितम्बर, 2012
3.	ध्रुवपद एवं वायलिन	गुंडेचा ब्रादर्स एवं प्रो० टी०एन० कृष्णन एवं डॉ० एन० राजम	20–21 नवम्बर, 2013
4.	वाद्य वृंद	–	30 जनवरी, 2013
5.	भारतीय साध्वियों के गीत	डॉ० सुभद्रा देसाई	8 मार्च, 2013

1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च, 2013 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित सेमिनार/सम्मेलन/प्रदर्शनियाँ

क्र.सं.	शीर्षक	दिनांक
1.	लोक कला महोत्सव एक दिवसीय संगोष्ठी (सेमिनार एवं प्रदर्शन)	21 अगस्त, 2012
2.	हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत प्रणाली के मध्य संवाद पर एक सेमिनार (सेमिनार)	6 से 8 सितम्बर, 2012
3.	दक्षिणी बिहार, पश्चिमी छत्तीसगढ़ एवं वाराणसी के आस–पास के क्षेत्रों के रंगमंच एवं लोक गाथागीत पर एक सेमिनार (सेमिनार)	17 से 19 अक्तूबर, 2012
4.	पूर्वरंग पर एक राष्ट्रीय सेमिनार	7 से 9 नवम्बर, 2012
5.	भारतीय लोक कथाओं पर एक राष्ट्रीय सेमिनार	17 से 19 दिसम्बर, 2012
6.	डि–टेरिटोरियलाइजिंग डाइवर्सिटी, कल्चर्स लिटरेचर्स एण्ड लैंग्वेजज ऑफ द इंडीजीनस पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	6 से 7 फरवरी, 2013
7.	मगध वाद्य (प्रदर्शन)	17 फरवरी, 2013
8.	भक्ति एवं यक्षगान पर राष्ट्रीय सेमिनार (सेमिनार एवं प्रस्तुतियाँ)	2 मार्च, 2013

9.	वाक एवं वाचन एक राष्ट्रीय सेमिनार (सेमिनार एवं प्रस्तुतियाँ)	4 से 5 मार्च, 2013
10.	पूर्वोत्तर की महिलाओं द्वारा प्रस्तुति (प्रस्तुतियाँ)	8 मार्च, 2013
11.	महिला दिवस पर सामूहिक चर्चा	11 मार्च, 2013
12.	सिंगारीमेलम् (प्रदर्शन)	14 मार्च, 2013
13.	रंगोत्सव (प्रस्तुतियाँ)	21 से 22 मार्च, 2013
14.	उत्तर–दक्षिण (सेमिनार एवं प्रस्तुतियाँ)	23 से 24 मार्च, 2013
15.	सुग्गी कुनीत (प्रस्तुतियाँ)	24 मार्च, 2013

अनुबन्ध–5

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रकाशनों की सूची
(1 अप्रैल, 2012 से 31 मार्च 2013 तक)

पुस्तकें

1. कलामुख टेम्पल्स ऑफ कर्नाटक : आर्ट एण्ड कल्चरल लिगेसी ।
2. रिसेन्ट स्टडिज ऑफ इण्डोनेशिया आर्किलाजी ।
3. रामकथा इन नरेटिव्स, परफार्मेंस एण्ड पिक्टोरियल ट्रेडिशन्स ।
4. द लिविंग ट्रेडिशन्स ऑफ महाभारत ।
5. इंटरकल्चरल डायलाग बिटवीन साउथ ईस्ट एशिया एण्ड नार्थ इंडिया ।
6. सेक्रेड टेम्पल ऑफ शबरीमला अयप्पा पी आर जी माथुर।
7. ग्लोबल राक आर्ट संपादक बी०एल मल्ला वी०एच०सोनावने ।
8. डा० बी०एल० मल्ला द्वारा सम्पादित रॉक ऑर्ट आफ आन्ध्र प्रदेश, ए न्यू सिंथिसिस बाय एन0 चन्द्रामोइली ।
9. डा० बी०एल० मल्ला द्वारा सम्पादित द वर्ल्ड ऑफ राक आर्ट एन ओवर वियू ऑफ फाइव कान्टिनेन्ट्स ।

प्रदर्शनी कैटलाग

1. उत्तर–पूर्व भारत के स्वदेशी थिएटर्स का कैटलाग (2011)
2. एस०एस० बिस्वास द्वारा सम्पादित शैलकला कैटलाग (शैलकला पर प्रदर्शनी, 2012)
3. डा० बी०एल० मल्ला द्वारा सम्पादित अण्डरस्टेंडिंग राक आर्ट इन कंटस्ट (शैलकला 2012 पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की विवरणिका)

फिल्में

1. कुमाऊँनी रामलीला परम्परा ओपे राम का प्रलेखन (हिमांशु जोशी द्वारा निर्देशित)
2. मालांदा में कौरवःकेरल में दुर्योधन मंदिर का प्रलेखन (डा०श्रीकला एस द्वारा, निर्देशित)
3. अंडर द फुल मूनः द आरवन फेस्ट (डा० साइमन जोन द्वारा निर्देशित)
4. पांडूवान (पांडवों का) डा सुधीर गुप्ता द्वारा निर्देशित, उत्तरा खण्ड एवं हिमाचल प्रदेश के महासु क्षेत्र में महाभारत की जीवन्त परम्परा का प्रलेखन ।
5. केरल की दस्ताना कठपुतली पावकथाकली ।
6. जम्मू एवं कश्मीर की शैल कला (लद्दाख) ।
7. झारखण्ड की शैल कला ।
8. भारत की शैल कला ।

अनुबन्ध–6
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची (2012–13)

श्रीमती दिपाली खन्ना	**सदस्य सचिव**
श्री वी०बी० प्यारेलाल	संयुक्त सचिव एवं कार्यकारिणी के सदस्य सचिव
सूत्रधार प्रभाग	
श्री जयन्त कुमार रे	निदेशक (प्र०)
श्री एस० सी० गहलोत	वित्त सलाह मुख्य लेखाधिकारी
श्री बी०बी०शर्मा	अवर सचिव (ईएमयू एवं पीएमसी)
श्री बी०एस० बिष्ट	उप वित्त लेखाधिकारी
डॉ० मंगलम् स्वामीनाथन	सहायक निदेशक (सूचना एवं जन सम्पर्क)
श्री अनुराग रोहतगी	अनुभाग अधिकारी (सेवा एवं आपूर्ति)
श्री सुनील गोयल	अनुभाग अधिकारी (प्र०)
श्री बिजेन्द्र	अनुभाग अधिकारी (सेवा एवं आपूर्ति)
श्री वी०पी०शर्मा	परामर्शदाता (समन्वय अनुभाग एवं ईएमयू)
श्री जरनैल सिंह	परामर्शदाता (प्रशासन एवं सेवा एवं आपूर्ति)
कलानिधि विभाग	
श्री पी०आर० गोस्वामी	निदेशक (पुस्तकालय एवं सूचना)
श्री वीरेन्द्र बांगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड्स)
डॉ० कीर्ति् कान्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
श्री कृष्ण कुमार सिन्हा	रिप्रोग्राफी अधिकारी
डॉ० दीप राज गुप्ता	कनिष्ठ रिप्रोग्राफी अधिकारी
श्री आनन्द दिवेदी	कनिष्ठ रिप्रोग्राफी अधिकारी
श्री राजीव भण्डारी	लेखा अधिकारी
श्रीमती रेनु बाली	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
श्रीमती आशा गुप्ता	बिब्लियोग्राफर
श्रीमती साफिया अल–कबीर	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

श्री बेयाज हाशमी	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री डीएनवीएस सीतारमैय्या पी	फोटोग्राफी अधिकारी
श्रीमती हिमानी पाण्डेय	उप पुरालेखपाल

मीडिया सेन्टर

श्री बशारत अहमद	नियन्त्रक (मीडिया सेन्टर)
डॉ० गौतम चटर्जी	उप नियन्त्रक (मीडिया सेन्टर)

सांस्कृतिक अभिलेखागार एवं संरक्षण

डॉ० अचल पाण्ड्या	विभागाध्यक्ष (अभिलेखागार एवं

कलाकोश विभाग

डॉ० एन०डी०शर्मा	एसोशिएट प्रोफेसर (विभागाध्यक्ष)
डॉ० विजय शंकर शुक्ल	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
डॉ० अद्वैतवादिनी कौल	सम्पादक
डॉ० राधा बनर्जी सरकार	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
डॉ० बच्चन कुमार	अनुसंधान अधिकारी
प्रो० मंसूर हैदर	परामर्शदाता
डॉ० सुषमा जाडू	कनिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
डॉ० सुधीर लाल	कनिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
डॉ० अजय कुमार मिश्र	कनिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
पं० विद्या प्रसाद मिश्र	कनिष्ठ अनुसंधान अधिकारी

जनपद–सम्पदा विभाग

डॉ० मौली कौशल	प्रो० एवं विभागाध्यक्ष
डॉ० श्रीकला शिवशंकरन	एसोशिएट प्रोफेसर
डॉ० एस०साइमन जोन	एसोशिएट प्रोफेसर
डॉ० बंसीलाल मल्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
डॉ० रमाकर पन्त	अनुसंधान एसोशिएट
श्री जयन्त चटर्जी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
डॉ० ऋचा नेगी	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी

श्रीमती बिंदिया चोपड़ा	निजी सचिव

कलादर्शन विभाग

डॉ० मंगलम स्वामीनाथन	कार्यकारी कार्यक्रम निदेशक
श्री सी०बी०डोबरियाल	परामर्शदाता (कलादर्शन एवं विजुअल आर्ट्स)
श्रीमती रमा नायर	निजी सचिव

विजुअल आर्ट्स

प्रो० आर० नन्दकुमार	प्रो० एवं विभागाध्यक्ष

कंप्यूटर सूचना विज्ञान लैब

श्री प्रतापानन्द झा	निदेशक (सीआईएल)
श्री उमेश बत्रा	प्रोग्रामर

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र, बैंगलूरू

प्रो० एस० सत्तार	अवैतनिक निदेशक

उत्तरी पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र गुवाहाटी

प्रो० ए०सी० भगवती	अध्यक्ष एवं अवैतनिक समन्वयक

पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

प्रो० के०डी०त्रिपाठी	अवैतनिक निदेशक
डॉ० एन०डी० तिवारी	अनुसंधान अधिकारी
श्री चतुर्भुज दास	लेखा अधिकारी